-: सप्तम् परिच्छेद :-

Chapter- 7

-: सप्तम् परिच्छेद :- Chapter-7

सिंहा ठाकुर व लाखन की लड़ाई :-

लाखनसिंह अपनी माता तिलका तथा नवविवाहिता पत्नी कुसुमा से विदा लेकर अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार सैन्यबल के साथ कन्नौज से महोबा के लिए प्रस्थान कर देते हैं ।

मार्ग में परहुल राज्य था, जहां सिंहा ठाकुर राज्य करता था । उसके किले की चोटी पर हमेशा दीपक जलता रहता था, जो रानी कुसुमा के लिए दुःसह था । दीपक का प्रकाश अथवा चन्द्रमा का प्रकाश विरहावस्था में अग्नि सदृश प्रतीत होता है, ऐसी कवियों ने कल्पना की है । अस्तु प्रस्थान करते समय लाखन ने अपनी रानी से यह वादा किया था कि वे सर्वप्रथम परहुल के राजा सिंहा ठाकुर की अट्टालिका पर जलते हुए दीपक को बुझा देंगे । हालांकि यह व्यर्थ का संघर्ष था । परन्तु शक्ति प्रदर्शन का कारण भी ।

परहुल पहुँचकर लाखन, आल्हा-ऊदल आदि से सलाह करते हैं । आल्हा राजा सिंहा के पास संदेशवाहक द्वारा पत्र प्रेषित करते हैं । पत्र में लिखा था कि- वह अपनी अट्टालिका पर प्रज्वलित दीपक को हमेशा के लिए बुझा दें । आल्हा का पत्र पढ़कर सिंहा ठाकुर अत्यन्त क्रोधित हो जाता है । बिना युद्ध के वह अपने महल का दीपक बुझा ले, यह उसकी गरिमा व स्वाभिमान के विपरीत बात थी । शान की हत्या थी । अतः वह सेना सजाकर युद्ध के मैदान में आ जाता है ।

लाखन की सेना के साथ सिंहा ठाकुर का भयंकर संग्राम होता है । लाखन उसे अधीनता स्वीकार करने की सलाह देते हैं तथा सेना सहित महोबा चलने का आदेश देते हैं । परन्तु वह कहां मानने वाला था । हर एक क्षत्री की अपनी गरिमा होती है । तोपों का युद्ध होता है तत्पश्चात् तलवारों की झंकार से रणभूमि झंकृत होने लगती है । दोनों योद्धा अपने-अपने इष्टदेव का स्मरण करके एक दूसरे पर प्रहार करते हैं । सिंहा ठाकुर के प्रहार लगभग खाली जाते हैं । अन्त में लाखन के प्रहार से वह मूर्छित हो जाता है तथा बन्दी बना लिया जाता है । लाखन महल में जाकर अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार लाल कमान पर तीर चढ़ाकर दीपक बुझा देते हैं । सिंहा ठाकुर, लाखन तथा बनाफर वीरों की अधीनता स्वीकार करके, सेना सहित महोबा चलने के लिए तैयार

हो जाता है । उन दोनों में मित्रता हो जाती है । "रासो परंपरा" में अकारण युद्ध व विनाश का द्वन्द्व ही सर्वोपरि रहा । अपनी शक्ति-विस्तार की लालसा तथा आधिपत्य की भावना से अभिप्रेरित होकर युद्ध करना सामान्य परम्परा थी ।

इस प्रकार परहुल पर विजय प्राप्त करके लाखन का दल आगे प्रस्थान करता है ।

गंगा ठाकुर और आल्हा की लड़ाई :-

राजा परमाल की सहायतार्थ जाते हुए मार्ग में कोडहरि का किला पड़ता है । यह किला यमुना नदी के किनारे स्थित है । वहाँ पर गंगा ठाकुर तथा बौना-सिंह नाम के दो भाई राज्य करते थे । जब जगनायक आल्हा-ऊदल को मनाने कनवज जा रहे थे, तो इसी स्थान पर वह विश्राम करने लगा था । पास में हरनागर नामक उड़नेवाला घोड़ा बंधा हुआ था । शिकार खेलने हेतु आए राजा ने जब यह उत्तम कोटि का घोड़ा देखा, तो वह लालायित हो गया और जगनिक की सुप्तावस्था में ही उसे चुरा ले गया । जब जगनिक जागे तो घोड़ा न पाकर बहुत दुखी हुए । घोड़े के पैरों के निशान के सहारे वह कोडहरि पहुँच गया । बहुत अनुनय-विनय करने पर राजा ने घोड़ा तो लौटा दिया, परन्तु घोड़े का अनोखा कोड़ा वापस नहीं किया था । चूंकि जगनिक उस समय जल्दी में था, इसलिए युद्ध करना संभव नहीं था । परन्तु उसने अपमान का अनुभव अवश्य किया था और अब उसे कोड़ा प्राप्त कर, अपने अपमान का बदला लेना था ।

जगनायक ने अपने अपमान की संपूर्ण कथा उदयसिंह {ऊदल} को सुनाई । सारी सेनाएँ कोडहरि आकर रुक जाती हैं । आल्हा गंगा ठाकुर के लिए कोड़ा वापस करने तथा अधीनता स्वीकार करने के लिए पत्र लिखते हैं । संदेशवाहक पत्र लिखकर कोडहरि के दरबार में जाता है । समाचार पाकर गंगा ठाकुर हाथी पर सवार होकर तथा विशाल सेना लेकर युद्ध के मैदान में आ जाता है । चूंकि गंगासिंह एक रिश्ते में लाखन के मामा होते थे, अतः लाखनसिंह उन्हें समझाते हैं कि वे तुरन्त ही जगनायक को कोड़ा वापस कर उनकी अधीनता स्वीकार कर लें तथा अपनी सेना सहित महोबा के लिए साथ में प्रस्थान कर दें । लाखन के समझाने का उस पर कोई असर नहीं होता है तब ऊदल को आक्रोश आ जाता है और वह गंगा को युद्ध के लिए ललकारता

है । दोनों सेनाओं में भयंकर युद्ध होता है । ऊदल की सेना के सामने गंगा ठाकुर की सेना के पैर उखड़ने लगते हैं । वह गंगा की सेना को भीषण मारों के द्वारा हतोत्साहित कर रहा था ।

अन्त में ऊदल, आल्हा से निवेदन करते हैं कि--

ऊदल झपटि गए आगे को, औ आल्हा से लगे बतान ।
तुम्हरी बरनी के गंगा हैं, तुरतै लेउ जंजीरन बांधि ।§1§

ऊदल का निवेदन सुनकर आल्हा अपने हाथी पचशावद को आगे बढ़ाते हैं और उसके सूंड में साँकिल पकड़ा देते हैं । अब हाथी साँकल घुमाता है जिससे कौडहरि की सेना में खलबली मच जाती है । सैनिक भयभीत होकर भागने लगते हैं । आल्हा तथा गंगासिंह आमने-सामने आते हैं । सबसे पहले आल्हा कौडहरि-नरेश से अस्त्र प्रहार करने को कहते हैं । वह पूर्ण शक्ति के साथ आल्हा पर घात लगाकर हमला करता है, परन्तु भाग्यवश आल्हा बाल-बाल बच जाते हैं । अब वह गुर्ज का प्रयोग करते हैं जिससे गंगासिंह के हाथी के स्वर्णकलश गिर जाते हैं तथा मौका पाकर पचशावद उन्हें साँकल में लपेट लेता है । राजा नीचे गिर जाते है तथा आल्हा द्वारा बन्दी बना लिए जाते हैं । बनाफर सेना में विजय का उद्घोष हो जाता है । ऊदल कौडहरि नगर में प्रवेश करके नगर लुटवा लेते हैं ।

अपने भाई को बन्दी बनाए जाने एवं नगर की लूटमार का समाचार सुनकर बौनासिंह आकर आल्हा को जगनायक का . कोड़ा वापस कर उनकी अधीनता स्वीकार करता है । वह अपने भाई को जान से न मारने की भी प्रार्थना करता है । इस प्रकार आल्हा-ऊदल बौना के वचनों को सुनकर गंगासिंह को मुक्त कर देते हैं । पराजित गंगासिंह अपने सैन्यबल के साथ पृथ्वीराज का मोहरा मारने के लिए लाखन तथा आल्हा के लश्कर के साथ हो लेता है ।

यमुना नदी पार करके वेतवा के कछार में समस्त सेनाएँ प्रवेश कर, डेरा डाल देती हैं । जगनायक आल्हा से निवेदन करते है कि रानी मल्हना के पास लाखन के आगमन की सूचना भेज दी जाए । आल्हा से आज्ञा लेकर जगनिक स्वयं महोबा के लिए प्रस्थान करता है ।

---

§1§ बृहत आल्हखण्ड : खेमराज प्रकाशन, बम्बई, सं. 2036, पृ. 501.

जगनायक रानी मल्हना से सारा समाचार निवेदन करना चाहता है, कि उसी समय माहिल परिहार महलों में हाजिर हो जाते हैं । अतः जगनिक वास्तविक समाचार न बताकर कहने लगते है कि-"रानी आपके द्वारा प्रदत्त पत्र लेकर मैं आल्हा-ऊदल को मनाने कन्नौज गया, तो उन्होंने पत्र पढ़कर, फाड़कर फेंक दिया तथा महोबा आने से साफ इंकार कर दिया ।"§1§ अब तो रानी मल्हना अत्यधिक चिंताग्रस्त हो गई । जगनिक के इशारे पर उन्होंने माहिल को अन्दर महल में जाने का आदेश दे दिया और वहीं एक कोठरी में बन्द करवा दिया । इसके बाद उन्होंने सारा वास्तविक हाल कह सुनाया कि आल्हा-ऊदल,लाखन सहित विशाल सेना लेकर बेतवा नदी के मैदान में पहुँच गए हैं । बनाफरों के आगमन की सूचना पाकर रानी की खुशी का ठिकाना न रहा ।

इधर माहिल, रानी मल्हना को यह सूचित करने आए थे कि पृथ्वीराज से प्राप्त समय की अवधि अब समाप्त हो रही है, अतः वह महोबा पर आक्रमण करके लूटमार करने वाले हैं, इसलिए वह दिल्ली-नरेश की माँगों को पूरा कर दें, जिससे महोबा की मर्यादा बच जाएगी । परन्तु आल्हा-ऊदल के आगमन की सूचना सुनकर माहिल के कलेजे पर साँप लोटने लगता है । वह बन्द कोठरी से पुकार उठता है कि-बहिन मुझे रिहा कर दो । अब मैं महोबा की चुगली नहीं करूँगा । रानी मल्हनदे को माहिल पर दया आ जाती है और वे उसे रिहा कर देती हैं । माहिल तो अपनी आदत के अनुसार चुगलखोर था ही । वह तुरन्त पृथ्वीराज के लश्कर में जाकर, सारी सूचना कह सुनाता है । वह पृथ्वीराज को सलाह देता है कि बेतवा नदी के समस्त घाटों पर कड़ा पहरा कर दिया जाए, जिससे कनवज की सेना बेतवा पार न कर सके तो महोबा पर विजय प्राप्त करना आसान हो जाएगा । ऐसा ही होता है, चौहान नरेश नदी बेतवा के समस्त घाटों तथा घाटियों पर कड़ा पहरा बैठाकर सेना तैनात कर देता है । उधर लाखन सहित आल्हा-ऊदल अपनी व्यूहरचना की योजना बनाते हैं ।

"परमाल रासो" §आल्हखंड§ के अनुसार अगला भीषण संग्राम नदी बेतवा का है,जो लाखन की अद्भुत वीरता का परिचायक है । गाँजर युद्ध ऊदल की वीरता का प्रतीक था । इसी युद्ध में लाखन दैवीय अस्त्र चक्र का प्रयोग करते है तथा पृथ्वीराज शब्दभेदी बाणों का प्रयोग करता दर्शाया गया है ।

---

§1§ वही : खेमराज प्रकाशन, बम्बई, पृ. 515.

नदी बेतवा का संग्राम {लाखन की वीरता} :-

"परमाल रासो" की जौहर-गाथाओं में नदी बेतवा का संग्राम रतीभान-पुत्र कन्नौज-नरेश लाखनराना की अद्भुत वीरता का परिचायक है।

माहिल द्वारा जब पृथ्वीराज चौहान को यह समाचार मिला कि जगनिक आल्हा-ऊदल को मनाकर कन्नौज से वापस लाए हैं तथा उनके साथ में लाखनराना भी आए हैं, तो उसके होश उड़ गए। दिल्ली वापस लौट जाना लज्जा का प्रतीक था। अस्तु, उसने बेतवा नदी के संपूर्ण घाटों {ब्यालीस घाट} को घिरवा कर कड़ा पहरा बैठा दिया। इधर ऊदल को जब पता चला कि महोबा जाने के सभी रास्ते बन्द हैं, नदी के सभी घाटों पर दिल्ली-नरेश का पहरा है, तो उन्होंने आल्हा से सलाह की।

आल्हा ने अपने तम्बू में सोने के कलश के ऊपर पांच सिपारी का बीड़ा रखवा दिया और घोषणा की, कि- जो वीर पृथ्वीराज से टक्कर लेने में सक्षम हो, वह उस पान के बीड़ा को ग्रहण करे। दिल्ली-पति की सेना का सामना करना, लोहे के चने चबाना था। अस्तु बीड़ा रखा हुआ कुम्हलाने लगा, परन्तु किसी भी राजा की हिम्मत नहीं हुई कि बीड़ा को ग्रहण करके प्रतिज्ञा करे, कि वह पृथ्वीराज चौहान से नदी बेतवा के सभी घाटों को मुक्त करा देगा। अन्त में ऊदल आक्रोश में आकर पान का बीड़ा ग्रहण करने लगते हैं, तब आल्हा उन्हें मना करते हुए कहते हैं कि—

तबहीं आल्हा बोलन लागे, तुम सुनि लेउ लहुरवा भाय।
गांजर बसरी रहे तुम्हारी, अब यह काम कन्नौजी क्याए। {1}

आल्हा की व्यंग युक्त बात सुनकर लाखन राना आक्रोश में आकर पान का बीड़ा ग्रहण कर लेते हैं। पास में बैठे हुए मीरा सैयद बनारस वाले तथा धनुवां तेली, (कन्नौज वाला) आदि लाखन की प्रशंसा करते हुए पूर्ण सहयोग करने का बचन देते हैं।

अब देर करने का समय ही नहीं था। लाखन तुरन्त नगरची को बुलाकर युद्ध का डंका बजवा देते हैं और कुछ ही क्षणों में लाखन की सेना, दिल्ली की सेना का मोहरा मारने के लिए तैयार हो जाती है। लाखन को युद्ध के लिए तैयार देखकर ऊदल उनके साथ चलने का आग्रह करते हैं, परन्तु उनके हृदय में तो आल्हा की बात चुभ गई थी। अतः वह कह उठते हैं, कि—

{1} नदी बेतवा की लड़ाई : कुँवर अमोलसिंह, पृ. सं. 15.

तब हँसि लाखन बोलन लागे, तुम ना कहो मर्म की बात ।
नामोरि मुरब्बी बूढ़ी होइ गई, ना बल घटो कनौजी वयार ।
बात कही तुम संग चलन की, सो हमरे मन नहीं समाय ।
मारि मगैहौं मैं पिरथी को, औ घूरेलौ हनौ निशान ।§1§

अस्तु, धनुवाँ तेली एवं मीरा सैयद के साथ लाखन पिरथी की सेना से लोहा लेने के लिए प्रस्थान कर देते हैं ।

पहले घाट पर चौड़ियाराय का पहरा था । लाखन का महावत अपने हाथियों को पानी पिलाने नदी में गया, तो चौड़ा के सन्तरी ने लाखन की सेना के हाथियों को घेर लिया और अपने झुंड में मिला लिया । सूचना पाकर लाखन अत्यन्त कुपित हुए । सेना सहित नदी किनारे पहुँच कर चौड़ा के हाथियों के झुंड सहित अपने हाथियों को उन्होंने अपने दल में मिला लिया । यह सूचना पाकर चौड़ा हाथी पर सवार होकर युद्ध के लिए लाखन का सामना करने हेतु उपस्थित हो जाता है । दोनों वीरों में आपस में वार्तालाप होता है । चौड़ा कन्नौज-नरेश से व्यर्थ में सेना सजाकर आने का कारण पूंछता है । लाखन यथोचित उत्तर देते हैं कि उन्हें महोबा देखने जाना है और वह अवश्य जाएंगे । चौड़ा बनाफर जैसी ओछी जाति का साथ देने के लिए भी लाखन को भाव-प्रबोधित करता है । वह यह भी कहता है कि-"तुम मेरे बेटे के समान हो, तुमसे मेरा कोई झगड़ा नहीं है । अतः तुम वापस चले जाओ । यहां दिल्ली-नरेश का सात लाख लश्कर पड़ा हुआ है, तुम उसका सामना नहीं कर सकते ।" लाखन के ऊपर चौड़ा ब्राह्मण की बातों का असर कहां पड़ने वाला था । उन्होंने तो बेतवा-विजय की बीड़ा उठा रखा था । अतः जब लाखन किसी भी प्रकार चौड़िया की बात से सहमत नहीं होते हैं तो वह अपनी ढाल फेंक देता है और कहता है कि- यदि तुम मेरी ढाल उठा लो, तो मैं समझूँगा कि तुम बड़े योद्धा हो ।" लाखन धनुवाँ तेली को संकेत करते है । धनुवाँ स्वयं कन्नौज का महान योद्धा था । वह चौड़िया के वीरों को काटता हुआ, ढाल उठाकर लाखन को दे देता है । यह लाखनराना का शक्ति-परीक्षण था ।

अब लाखनसिंह अपनी कटार फेंककर यह ऐलान करते हैं कि यदि मेरी कोई कटार उठा ले, तो मैं अपनी पराजय स्वीकार कर लूंगा । चौड़ा के सिपाही कटार

---

§1§ वही : पृ.सं. 18.
§2§ बड़ा आल्हखंड : पं.महावीर प्रसाद, पृ.सं. 520.

उठाने के लिए झपटते हैं परन्तु ताल्हन सिंह उनकी शक्ति को नाकाम कर देते हैं और कटार उठाकर लाखन को दे देते हैं । चौड़ा यह देखकर दंग रह जाता है । लाखन प्रसन्न हो जाते हैं तथा धनुवां व ताल्हन की प्रशंसा करते हैं । अब दोनों सेनाओं में युद्ध प्रारम्भ हो जाता है । तोपें, तलवारें, भाले, बरछें आदि वीरों को खाने लगे । सिपाही पागल एवं भूखे भेड़ियों की तरह एक-दूसरे पर टूट पड़े । खून के फव्वारे छूटने लगे ।

लाखन ने अपनी इष्ट देवी का स्मरण करके कमान पर रखकर कैबर (विशेष प्रकार का तीखा बाण) छोड़ा, जिससे चौड़िया का हाथी घायल होकर युद्ध-स्थल में बैठ गया । अब वह जमीन पर हो गया और निहत्था हो गया । लाखनराना चाहते तो उसका वध कर सकते थे । परन्तु उस समय युद्ध-नीति के अनुसार निहत्थे पर वार करना चरित्रहीनता माना जाता था तथा ब्राह्मण का वध करना भी युद्ध धर्म के विपरीत था । अतः वह उसको चेतावनी देते हुए, दूसरा हाथी लाने को कहते हैं । सेनापति को असहाय अवस्था में देखकर सेना का मनोबल कमजोर पड़ जाता है और वह भागने लगती है । चौड़ा भी अपना मोर्चा हटा लेता है क्योंकि मोर्चा हटाने के अतिरिक्त उसके पास कोई चारा न था । अपने प्राण बचाकर वह युद्ध-स्थल से भाग खड़ा होता है और पृथ्वीराज चौहान को सारा वृतांत बताता है । इस प्रकार वर्तमान युद्ध की श्रृंखला में लाखन को प्रथम विजयश्री मिलती है । उनकी सेना में विजय का घोष होने लगता है । वीरों का हौसला बुलंद हो जाता है ।

पृथ्वीराज चौहान और लाखन का संग्राम :-

चौड़ियाराय की पराजय का समाचार पाकर महाराज पृथ्वीराज कुपित हो गए । उन्होंने अपने सबसे पराक्रमी पुत्र ताहरसिंह को बुलाकर युद्ध की तैयारी का आदेश दे दिया । ताहर दानवीर कर्ण का अवतार माना जाता है । ताहर ने कुछ ही क्षणों में संपूर्ण सेना को एक ही साथ युद्ध हेतु तैयार कर लिया, जिसमें बड़े-बड़े पराक्रमी योद्धा शामिल थे । आदिभयंकर नामका हाथी सजाया गया, जो महाराज पृथ्वीराज की खास सवारी था । इसके अतिरिक्त अनेक हाथी, घोड़े व पैदल सेना थी । कुछ ही समय में दिल्ली की विशाल सेना रणक्षेत्र में उपस्थित हो गई ।

दिल्ली की विशाल सेना देखकर कन्नौज-नरेश लाखनराना दंग रह गए ।

उन्होंने अपनी सेना के खास-खास योद्धाओं को खास-खास मोर्चा संभालने का आदेश दे दिया। ताल्हन सैयद, धनुवां तेली, गंगासिंह ठाकुर कोडहरि वाला, सिंहा ठाकुर परहुल वाला तथा ताहर के मोर्चा पर स्वयं लाखन सिंह थे। लाखन की भीषण मारों तथा भयंकर ललकार से दुश्मन की सेना के छक्के छूट गए। ताहर का मोर्चा हटने लगा। युद्ध की ऐसी स्थिति देखकर माहिल, महाराज पृथ्वीराज को एक ही साथ आक्रमण करके लाखन की घेराबंदी की सलाह देने लगे। यह बात महाराज पृथ्वीराज को पसन्द आई और उन्होंने नौ सौ हाथियों की सेना लेकर लाखन की घेरा-बंदी कर ली।

पृथ्वीराज महाराज द्वारा जब लाखन की घेराबंदी कर ली गई तो कन्नौज की सेना के पाँव उखड़ने लगे और धनुवां तेली एवं सैयद जैसे योद्धा अपना मोर्चा हटाकर भागने लगे। युद्ध का ऐसा भीषण दृश्य देखकर एवं नौ सौ हाथियों के बीच में घिरे हुए कन्नौजीराय चिंतित होने लगे। यहाँ उनका कोई भी सहयोगी दिखाई नहीं दे रहा था। अब उन्हें माता तिलका, दादा जयचंद तथा नवविवाहिता सुन्दरी प्रिया कुसुमा की बातें याद आने लगी, जिन्होंने बार-बार युद्ध में आने के लिए मना किया था। अब लाखन का पौरुष जागृत होता है। वह अपने महावत सुपना और मुरही हथिनी से बातचीत करते हैं। सुपना उन्हें युद्ध से भाग चलने की सलाह देता है, लेकिन लाखन उसे धिक्कारते हैं तथा जीवन-मरण का बोध कराते हैं। इसी प्रकार वह भुजरासिन हथिनी का भाव प्रबोधन करते हैं। यथा :-

> थक ललकार दियौ लाखन ने, अरु मुरही से कही सुनाय।
> मस्तक पूजो तिलका माता, तब तुमसे यह कही सुनाय।
> तुमको सौंपति हौं लाखन को, तुमना धरियो पांव पिछार।
> याही दिन को रानी तिलका ने, पालो तुमहिं बहुत दुलराय।{1}

लाखन की ऐसी प्रभावशाली वाणी सुनकर हाथिनी भाव विभोर होकर आदेश का पालन करने के लिए तत्पर हो जाती है। लाखन मुरही से उतर कर उसे पर्याप्त मादक द्रव्य व भांग इत्यादि खिलाकर, विशाल सांकिल {लोहे की} पकड़ा देते हैं। हाथिनी नशे में हो जाती है। नौ सौ हाथियों के दंगल में लाखन व उनकी हाथिनी अनोखा जौहर

द्रष्टव्य : नदी बेतवा की लड़ाई : बड़ा आल्हखंड, पं. सीताराम कृत
एवं नदिया बेतवा का संग्राम : कुँवर अमोलसिंह.

{1} बड़ा आल्हखण्ड : पं. महावीर प्रसाद कृत : पृ. सं. 528.

दिखाने लगी । सिंह की तरह लाखन की झपटों से दुश्मन की सेना के पैर कंपित होने लगे । अकेले लाखन का जौहर देखकर महाराज पृथ्वीराज आश्चर्य चकित हो गए । लाखन आन के लिए हथेली पर प्राण रखकर युद्ध कर रहे थे । ऐसे काल-कराल लाखन से दिल्ली-पति ने मोहनमाला देकर मित्रता भी करनी चाही, जिसे कन्नौजीराय ने ठुकरा दिया, क्योंकि वह आल्हा व ऊदल की मित्रता को नीचता का प्रतीक बता रहे थे । भीषण नर-संहार से नदी बेतवा का पानी रक्त-वर्णी हो गया था तथा नदी बेतवा के सभी कछारों में {ब्यालीस घाट तथा सोलह घाटियां} अंधाधुंध तलवार चल रही थी ।

इसी अन्तराल में आल्हा की अश्वसेना का मालिक रूपन घोड़ों को पानी पिलाने हेतु नदिया पर आया । रक्त-वर्णी नदी देखकर तथा विशाल क्षेत्र में तलवार चलते देखकर शंकित हो गया । उसने नजर पसार कर लाखन को देखा, परन्तु वह अपनी हथिनी पर से कहीं दिखाई नहीं दिए । अब उसे ऐसा प्रतीत हो रहा था कि लाखन-राना युद्ध में वीरगति को प्राप्त हो गए हैं । वह द्रुतगति से आकर आल्हा-ऊदल को युद्ध की स्थिति से अवगत कराता है । वह यह भी कहता है कि चौहान की विशाल सेना का सामना करने के लिए लाखन मात्र-एकाकी है । शायद वह रणचण्डी का शिकार हो गए हैं । उनका समाचार युद्ध क्षेत्र से लाया जाए ।

रूपना की बात का आल्हा पर कोई असर नहीं होता है । तब माता देवल सूचना पाकर ऊदल को लाखन की सहायतार्थ युद्ध में जाने का आदेश देती है, परन्तु ऊदल यह कहकर टाल देते हैं कि जब बड़े भाई आल्हा आदेश देंगे, तब मैं युद्ध में जाऊँगा । बड़ा भाई पिता सदृश होता है । माता देवल आल्हा व ऊदल को नाना प्रकार से समझाती है । वे कहती है कि-"लाखन तुम्हारे परमप्रिय हितैषी ही नहीं, माता तिलका की एक मात्र संतान हैं । राजा जयचंद की आशा लकड़िया हैं तथा नवपरणीता कुसुमा के भरतार हैं । तुमने पृथ्वीराज की सेना का सामना करने के लिए अकेले लाखन को भेज दिया है । यह न्यायोचित नहीं है । यदि लाखन की हत्या हो गई, तो संसार तुम्हें ही दोषी ठहरायेगा ।"{1} माता देवल की बातों का आल्हा पर कोई असर नहीं पड़ता है । आल्हा यह कहकर टाल देते हैं कि- लाखन समर्थ योद्धा हैं तथा नदी बेतवा संग्राम उन्हें जीतना है, क्योंकि गांजर युद्ध तीन माह तेरह दिन तक

{1} वही : पृ.सं. 531-533. एवं नदी बेतवा का संग्राम : कुँवर अमोलसिंह, पृ.सं. 25-27.

कठिन तलवार करके उदल ने जीता था । यदि उदल गांजर-संग्राम में मारे जाते तो सहोदर भाई कहां मिलता ?

जब देवल [आल्हा-उदल की माँ] को यह प्रतीत होता है कि आल्हा मेरी बात नहीं मानेंगे तो वह दोनों पुत्रों को धिक्कारती हुई रानी सोनवां [आल्हा की पत्नी] के पास जाती हैं । उन्हें विश्वास था कि सोनवां की बात को उदल कभी नहीं टाल सकते हैं । अतः रानी सोनवां आकर उदल को समझाती हुई कहती है कि- "यदि तुम युद्ध में लाखन की सहायतार्थ नहीं जाओगे तो संसार हंसी उड़ाएगा और जिस प्रकार तुम्हारा भाई मलखान कपट से मार दिया गया था उसी प्रकार मित्र भी चला जाएगा ।" [1]

सोनवां के समझाने व धिक्कारने से उदल युद्ध के लिए तैयार हो जाते हैं तथा अपने बड़े भाई से भी युद्ध के लिए प्रस्थान हेतु आग्रह करते हैं । अब आल्हा विवश थे क्योंकि उदल युद्ध हेतु तैयार हो चुके थे । अस्तु शीघ्र ही अपने सैन्यबल के साथ आल्हा-उदल रणक्षेत्र के लिए प्रस्थान करते हैं । मार्ग में धनुवां तेली, सैयद आदि युद्ध से पीठ दिखाकर भागे हुए मिलते हैं । युद्ध का समाचार मिलता है । समाचार पाकर उदल सैयद आदि को धिक्कारते है कि तुमने सात लाख सेना का मुकाबला करने के लिए लाखन को अकेला छोड़ दिया । लौटे हुए योद्धाओं का भी पौरुष जागता है और वे भी पुनः आल्हा-उदल के साथ संग्राम-स्थल की ओर चल देते हैं ।

नदी बेतवा की ऊँची कंगार पर चढ़कर उदल देखते है कि लाखन, पृथ्वीराज चौहान के नौ सौ हाथियों विशाल दल के बीच में अकेले फंसे हुए, खून से लथपथ अनोखे जौहर का परिचय दे रहे हैं । पहले वे उनकी बुजरासिन हाथिनी को लाखन-विहीन देखकर शंका-ग्रस्त हो जाते हैं । वे लाखन की वीरता को देखकर मन ही मन प्रशंसा करते हैं । इसी समय वह महाराज पृथ्वीराज चौहान के हाथों में लाल कमान तथा लाखन के हाथों में चक्र देखते हैं ।

लाखन की भीषण मार से जब दिल्ली-पति की सेना में त्राहि-त्राहि व भगदड़ मच गई, तो माहिल के कहने पर चौहान ने शब्दवेधी बाण लाखन पर चला दिया । पृथ्वीराज की यह रणनीति देखकर, लाखन ने सोचा कि अब उनके प्राण नहीं

- -

[1] वही : पृ. सं. 531-533. एवं नदी बेतवा का संग्राम : कुँवर अमोलसिंह, पृ. 25-27.

बच सकते हैं, क्योंकि शब्दवेधी वाण का निशाना खाली नहीं जाता था । अतः उन्होंने फूलमती {लाखन की इष्टदेवी} का स्मरण करके चक्र चला दिया । चक्र दुश्मनों को काटता हुआ पृथ्वीराज की ओर बढ़ता है । चन्दवरदाई {पृथ्वीराज रासो का लेखक} संग्राम-भूमि में वहीं खड़ा था । चक्र आता देखकर, उसने सोचा कि अब महाराज की मृत्यु निश्चित है । अतः वह महाराज पृथ्वीराज से चक्र को पीठ दिखाने के लिए कहता है । ऐसा माना जाता है कि चक्र का प्रहार खाली नहीं जाता था, परन्तु यदि कोई पीठ दिखा दें, तो चक्र चलाने वाले के पास वह वापस आकर उसी का संहार करता था । जब पृथ्वीराज ने महाकवि चन्द के कहने पर पीठ दिखा दी तो चक्र वापस लौट आया । अब तो लाखन और भी चिंतित हो गए । उन्होंने अपने इष्टदेव व कुलदेवी का स्मरण किया, तो चक्र ने शब्दवेधी वाण को काट दिया और लाखन के पास आकर गिरा, जिससे वह मूर्छित हो गए ।

ऊदल और आल्हा तुरन्त दल के भीतर घुस जाते हैं । अपने रेशमी दुशाले से लाखन के शरीर को खून से साफ करते हैं फिर सोने के कटोरे में पानी पिलाते हैं । वे लाखन के जौहर की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए कहते हैं, कि-अब आप भुरही पर बैठो और मेरा जौहर देखो । उन्हें ऊदल की यह बात अच्छी नहीं लगती है । वे कहने लगते हैं कि—

न मेरी भुरही छूटी होइ गई, न खस जाय गई तलवारि ।
बेदि के मारौं मैं पिरथी को, सारे घाट लेव छिनवाय ।{1}

ऊदल लाखन के सामर्थ्य और शक्ति का बार-बार बखान करते हैं और दोनों भाई दल के भीतर घुस जाते हैं । सैयद, धनुवाँ आदि भी अपना मोर्चा संभाल कर पूर्ण शक्ति के साथ युद्ध करने लगते हैं । ऊदल पृथ्वीराज के सम्मुख जाकर ललकारते हुए कहते हैं :-

न यदि आए राजा जयचंद, न यदि आए रजा परिमाल ।
अकेले लाखन की मारौं मैं, तुमने ले लई लाल कमान ।
तुम्हें मुनासिब यह नाहीं थी, तुमको शोभा देता नाय ।{2}

इस प्रकार ऊदल के धिक्कारने से पृथ्वीराज लज्जित हो जाते हैं । अब उन्हें विश्वास हो गया था कि बनाफर वीरों के सामने विजय प्राप्त करना संभव नहीं है । अस्तु, आल्हा, ऊदल, लाखन, ताल्हन सैयद, धनुवाँ, सिंहा व गंगा आदि के भयंकर प्रहारों

- -

{1} वृहद् आल्हखण्ड : खेमराज प्रकाशन, बम्बई, सं. 2036, पृ. सं. 508.
{2} आल्हखण्ड : पं. भोलानाथ, प्रकाशन सन् 1921, पृ. सं. 536.

से पृथ्वीराज की सेना भागने लगती है । महाराज पृथ्वीराज अपना मोर्चा हटा लेते हैं और माहिल को धिक्कारने लगते हैं ।

इस प्रकार लाखन नदी बेतवा के ब्यालीस घाट एवं सोलह घाटियों को पृथ्वीराज से मुक्त करवा लेते हैं । विजय का सेहरा लाखन के सिर पर बाँधा जाता है । आल्हा-ऊदल, पृथ्वीराज के तम्बुओं की लूट करा लेते हैं । उनकी सेनाएँ दिल्ली की ओर वापस प्रस्थान करने लगती हैं ।

जब राजा परमाल को यह पता चलता है कि आल्हा-ऊदल के साथ कन्नौज-नरेश लाखनराना भी आए हैं, जिन्होंने पृथ्वीराज चौहान को पराजित किया है, तो वह ब्रह्मानंद को लेकर स्वयं लाखन के स्वागतार्थ रणक्षेत्र में आते हैं तथा लाखन को गले लगा लेते हैं । लाखन ब्रह्मानंद से भी गले मिलते हैं । आल्हा-ऊदल आदि उन्हें प्रणाम करके ब्रह्मानंद को अभिवादन करते हैं । चंदेल-नरेश अपनी गलती स्वीकार करते हैं तथा लाखन सहित महोबा चलने का आग्रह करते हैं । आल्हा-ऊदल सहित लाखन व सोनवाँ तथा देवल आदि महोबा नगर में जाते हैं ।

महोबा नगर तोरण-पताकाओं से सजाया जाता है । लाखन के प्रवेश पर तोपों की सलामी दी जाती है । लाखन नगर की शोभा देखकर तथा सोने का चमत्कार देखकर दंग रह जाते हैं । ऐसा कहा जाता है, कि परमर्दिदेव के पास पारस-पथरी थी, जो लोहा को स्पर्श करने पर सोना बना देती थी । इसके प्रभाव से महोबा में समृद्धि व वैभव का वातावरण था । लाखन का उचित सम्मान किया जाता है । अन्य राजा भी यथोचित आतिथ्य के पात्र बनते हैं । रानी मल्हना सभी बेटों {लाखन सहित} की आरती उतारकर मस्तक चूमती है । परमर्दिदेव आल्हा-ऊदल से बेहिचक महोबा में राज करने का आग्रह करते हैं । वे यह बताते हैं, कि उनके न रहने पर माहिल की चुगली के कारण पृथ्वीराज बार-बार चढ़ाई कर देते हैं । वह चन्देल वंश की मर्यादा को समाप्त करने पर तुले हुए हैं । परमाल-नरेश की बात सुनकर आल्हा-ऊदल भाव विभोर हो जाते हैं । वे दसपुरवा को पुनः अपनी राजधानी बना लेते हैं और महोबा में रहने के लिए तैयार हो जाते हैं । सभी गणमान्य राजा उचित आतिथ्य पाकर कुछ समय बाद अपने-अपने राज्यों को वापस लौट आते हैं । आल्हा-ऊदल अपनी माता व रानी सहित दसपुरवा के वैभव में समय व्यतीत करने लगते हैं । इस भीषण युद्ध में दोनों पक्षों को बड़ी भारी धन-जन की हानि उठानी पड़ती है ।

युद्ध या संग्राम विनाश को ही जन्म देता है, समृद्धि को नहीं । युद्ध का आदि, अन्त व मध्य विनाश से प्रारम्भ होता है । परन्तु, मानव अहम् से अभिप्रेरित होकर यह भाव भूल ही जाता है । इतिहास, युद्ध के परिणामों से आज भी मानव को अवगत ही नहीं कराता, बल्कि आगाह भी करता है कि- विकास की लता शांति-पूर्ण वातावरण में ही पुष्पित एवं फलित होती है ।

उदल-हरण की लड़ाई :-

"परमाल रासो" या आल्हखण्ड के कथाचक्र के परिप्रेक्ष्य में, आल्हा-उदल की महोबा वापिसी के बाद उदल-हरण की कथा आती है । उत्तर भारत में जेठ दशहरा का पर्व गंगा-स्नान का पवित्र पर्व माना जाता है । गंगा-स्नान का यही पावन पर्व था । सभी नर-नारी गंगा-स्नान करने जा रहे थे । रानी सोनवां अट्टालिका पर खड़ी यात्रियों की भीड़ देख रही थी । अतः उसके मन में भी गंगा-स्नान करने की लालसा जागृत हो जाती है । वह उदल को महलों में आमंत्रित करती है और अपने हृदय की बात कहती है । भारतीय संस्कृति के अनुसार बड़े भाई की आज्ञा लेना आवश्यक माना जाता है । अस्तु, उदल अपने बड़े भाई आल्हा से गंगा-नहाने की आज्ञा मांगते है । पहले तो वह मना कर देते हैं क्योंकि वह जानते थे, कि उदल उपद्रवी प्रकृति का है, परन्तु अनुनय-विनय करने पर वे उन्हें आज्ञा प्रदान करते हैं ।

उदल महलों में आकर अपनी भाभी सोनवां को सारा हाल सुनाते हैं और सोनवां तथा फुलवा (उदल की पत्नी) दोनों डोली में बैठकर गंगा का पवित्र स्नान करने के लिए तैयार हो जाती हैं । उधर उदल जगनिक को साथ में लेकर अपने सैन्यबल के साथ ऐतिहासिक गंगा-घाट बिठूर (उ.प्र.) के लिए प्रस्थान करते हैं । बिठूर पहुँच कर गंगा नदी के रेतीले प्रदेश में,वे अपना पड़ाव डाल देते हैं । तम्बू लग जाते हैं । प्रातः गंगा-स्नान का मुहूर्त था । सभी यात्री तथा अनेकानेक जगहों से आए हुए,राजा गंगा-स्नान करते हैं । उदल भी दोनों रानियों तथा जगनायक के साथ गंगा में स्नान कर,भिखारियों तथा ब्राह्मणों को दान-दक्षिणा प्रदान करते हैं ।

संयोग-वश इसी गंगा मेले में सोभिया नटनी, जो कि हुन्नागढ़ की निवासी थी, अपने नट समुदाय के साथ गंगा-स्नान हेतु आई हुई थी । उसने उदल के सौन्दर्य और वीरता की कहानियां सुन रखी थी । अतः वह उदल को वरण करना चाहती थी ।

उसका तंबू भी ऊदल के तम्बू के पास ही था । वह मेले में कला-प्रदर्शन करती हुई ऊदल के तम्बू में जाकर अपनी कला का प्रदर्शन करती है । ऊदल के रूप को देखकर मोहित हो जाती है । सोभिया जादू विद्या में निपुण थी, परन्तु आल्हा की पटरानी सोनवां कहीं उससे श्रेष्ठ थी । उसके सामने ऊदल पर जादू चलाना संभव न था । अतः वह संपूर्ण राज-समाज पर मोहिनी डाल देती है तथा सोनवां के गहने की पिटारी पर जादू चलाकर उसे गायब कर देती है ।

मेला समाप्त होने पर ऊदल रानियों सहित महोबा को वापस लौटते हैं । यमुना नदी पार करते समय सोनवां को अपने आभूषण वाली पिटारी की याद आती है । वह व्याकुल-सी हो जाती है तथा ऊदल को सारी बात बता देती है । ऊदल आभूषणों की पिटारी का पता लगाने के लिए वापस बिठूर आते हैं तथा जगनिक रानियों तथा सेना सहित महोबा चले जाते है । जब ऊदल वापस बिठूर में आते हैं तो उस समय पूरा मेला समाप्त हो चुका था, यात्री जा चुके थे, मात्र सोभिया बेड़िन का तम्बू लगा हुआ था । ऊदल को देखकर वह कारण जानते हुए भी कारण पूछती है । ऊदल सारी कहानी बयान करते हैं । सोभिया कहती है कि- तुम रात्रि भर विश्राम करो । आभूषण की पिटारी का मैं पता लगा दूँगी । उसकी बात मानकर ऊदल रुक जाते हैं । रात्रि में विश्राम करते है तो वह ऊदल से विवाह-प्रसंग की बात करती है । ऊदल साफ इंकार कर देते हैं, जिससे क्रुद्ध होकर सोभिया ऊदल को तोता बनाकर पिंजरे में बन्द कर देती है । वह जब चाहती है ऊदल को मनुष्य बनाकर नाना-प्रकार की प्रताड़नाएँ देती है ।

इधर, महोबा में लम्बे समय तक ऊदल के न आने से आल्हा सहित सभी लोग अत्यन्त व्याकुल होने लगे । तब सोनवां ने कहा कि- निश्चय ही ऊदल को कोई हरण कर ले गया है । वह जादू के प्रभाव से चील पक्षी बनकर संपूर्ण राजाओं के राज्यों में भ्रमण करती है । अन्ततः झारखंड की ओर प्रस्थान करती है जहां पर सोभिया बेड़िन या नटनी ने ऊदल को तोते के रूप में कैद कर रखा था । एक पेड़ से लटके पिंजरबद्ध तोते के रूप में ऊदल को देखकर सोनवां बहुत दुखी हुई । रात्रि के समय ऊदल को दी जाने वाली प्रताड़नाएँ भी उसने देखी, जिससे वह और भी चिंतित हुई । एक रात्रि

प्रसंगाधार : बड़ा आल्हखंड, पं. सीताराम कुप्त, हिन्दी पुस्तकालय, मथुरा प्रकाशन, 1952, पृ. सं. 541-551.

वह पिंजरा लेकर जंगल में पहुँची और ऊदल को मानव बनाकर बातचीत की । उसने कहा कि यदि सोभिया शादी की बात करती है तो सहमति प्रदान करदो । ऊदल अपनी भाभी की इस बात को मानने के लिए तैयार नहीं थे । सोनवां ने महोबा चलने के लिए कहा, तो ऊदल ने कहा- कि चोरा-चोरी जाना क्षत्रिय धर्म नहीं है । जब दादा [आल्हा] फौज लेकर आएंगे तथा युद्ध में हमारी विजय होगी, तभी महोबा जाएंगे।

ऊदल की बात सुनकर सोनवां महोबा वापस आकर आल्हा को ऊदल का सारा वृतांत सुनाती है । आल्हा तुरन्त ही फौज सजाकर झारखंड की ओर प्रस्थान करते हैं । उनके साथ जगनिक, इन्दल, देबा एवं रानी सोनवां स्वयं पालकी में बैठकर जाती है, क्योंकि वह जानती थी कि वहां जादू की लड़ाई निश्चय होगी और उससे बनाफरों की पराजय हो सकती है । झारखंड पहुँचकर बनाफर वीरों की सेना का पड़ाव [विश्राम] पड़ जाता है । रात्रि में सोनवां चील पक्षी बनकर ऊदल का पिंजरा लाती है और लश्कर में लाकर उन्हें मानव बना देती है । इसके बाद नटसेना के साथ आल्हा-ऊदल का भयंकर संग्राम होता है । सोभिया नटनी का भाई सहुआ बड़ा बहादुर था । उसने आल्हा की सेना का डट कर मुकाबला किया ।

इन्दल और जगनिक की मारों के सामने नटों की सेना भागने लगी तो सोभिया बहुत चिंतित हुई । उसने स्वयं आकर बड़े-बड़े जादू के करिश्मों द्वारा आल्हा की सेना को तबाह करने का प्रयास किया किन्तु सोनवां के आगे उसकी एक न चली । सोनवां रानी उसकेसभी जादू के प्रहारों को नाकाम करती चली जा रही थी । अन्त में सोभिया क्रुद्ध होकर सोनवां पर टूट पड़ती है, दोनों में द्वन्द्व युद्ध होने लगता है । अन्त में सोनवां के कहने पर इन्दल अपनी कटार से उसकी चोटी काट देते हैं, जिससे उसकी सारी जादू-विद्या प्रभावहीन हो जाती है । सोभिया का जादू-अस्तित्व समाप्त होने पर नट-सेना भागने लगती है । आल्हा की विजय होती है ।

झारखंड से विजय प्राप्त करके, सेना महोबा के लिए रवाना होती है । आल्हा की आज्ञानुसार सेना मार्ग में झुन्नागढ़ की सीमा में रात्रि का विश्राम करती है । झुन्नागढ़ का राजा विशाल लश्कर देखकर भयभीत हो जाता है । संदेशवाहक द्वारा जब उसे पता चलता है कि यह आल्हा का लश्कर है तो वह बहुमूल्य रत्नों की भेंट लाकर

द्रष्टव्य : ऊदल-हरण : कुँवर अमोलसिंह, श्रीकृष्ण पुस्तकालय प्रकाशन, कानपुर, 1969.

आल्हा से मिलने आता है । उनका उचित सत्कार करता है । झारखण्ड विजय और सोभिया बेड़िन को जादू-प्रभावहीन जानकर यह अत्यन्त प्रसन्न होता है । एक दिन का आतिथ्य स्वीकार कर आल्हा महोबा आते हैं । ऊदल के आगमन का समाचार पाकर महोबा नगर के सभी नागरिकों में प्रसन्नता की लहर दौड़ जाती है । रानी मल्हना तथा परमाल व माता देवल को प्रणाम करके ऊदल उनके गले लग जाते हैं ।

<u>ब्याला के गौने का प्रथम संग्राम :-</u>

ब्याला या बेला महाराज पृथ्वीराज चौहान की इकलौती पुत्री थी, जिसका विवाह पृथ्वीराज की इच्छा के विरुद्ध परमर्दिदेव के ज्येष्ठ पुत्र ब्रह्मानंद के साथ संपन्न हुआ । ऐसा माना जाता है, कि कलयुग के अनेकानेक योद्धा, द्वापर के महाभारत के अनेक पात्रों के अवतार थे, जिनमें ब्याला, द्रौपदी का अवतार मानी जाती है । महाभारत के भीषण युद्ध का कारण द्रौपदी ही बनी थी, उसी प्रकार कलयुग में ब्याला रूपी द्रौपदी ने चौहान और चन्देलों के मध्य भीषण युद्ध को जन्म देकर, बड़े-बड़े योद्धाओं को मृत्यु का ग्रास बना दिया था ।

नदी बेतवा की पराजय के बाद पृथ्वीराज चौहान त्रस्त हो गए थे । उधर लाखनराना कन्नौज-नरेश, महाराज परमर्दिदेव का आतिथ्य स्वीकारते हुए कुछ के लिए महोबा में प्रवासकाल व्यतीत कर रहे थे । एक दिन राजा परमाल का दरबार लगा हुआ था, तभी माहिल ने राजा चन्देल को ब्रह्मा के गौने की याद दिलाई । उसने कहा-"महाराज यह अच्छा मौका है जब कन्नौजीराय सहित आल्हा-ऊदल वापस महोबा आ गए है । इसलिए ब्रह्मा के गौने हेतु देर नहीं करना चाहिए ।" माहिल की बात सुनकर परमाल ने सभा में ब्रह्मा के गौने हेतु पान की बीड़ा रखवा दिया, परन्तु कोई भी योद्धा बीड़ा उठाने को तैयार नहीं हुआ । जब बीड़ा कुम्हलाने लगा तो ऊदल ने आक्रोश में आकर गौने का बीड़ा उठा लिया । माहिल को यह अच्छा नहीं लगा । वह चाहता था- चन्देल वंश की हानि । वह यह भी जानता था कि यदि आल्हा-ऊदल ब्रह्मा के साथ गौने में जाएंगे तो चन्देलों की विजय निश्चित है । अस्तु उसने ब्रह्मानंद को बुलाकर धीरे से कहा कि-"यदि ऊदल गौने की बारात में जाएंगे, तो विदा होना असंभव है क्योंकि चौहान को यह अच्छा नहीं लगेगा कि बनाफर तुम्हारे साथ आएं । मैं तुम्हारे साथ चलकर गौना दिला दूंगा ।"

ब्रह्मानंद माहिल की बात मानकर ऊदल के हाथ से भरी सभा में पान का बीड़ा छीन लेते हैं। आल्हा-ऊदल लज्जित होकर दशपुरवा चले आते हैं। नियत समय पर ब्रह्मानंद गौने हेतु सेना तैयार कर, दिल्ली की ओर प्रस्थान करने को तैयार हो जाते हैं। उनके साथ जगनिक और माहिल भी होते हैं। माता मल्हना अत्यन्त चिंतित थी। वह जानती थी कि ऊदल के बिना पृथ्वीराज से कौन टक्कर ले सकता है और वे अपने अपमान के कारण किसी भी प्रकार से गौने की बारात में जाने के लिए तैयार नहीं हो सकते हैं। समस्या जटिल थी। मल्हना यह भी जानती थी कि अकेले ब्रह्मा यदि दिल्ली जाएंगे तो उनका जीवित लौटना असंभव-सा है।

अतः वह लाखनराना को बुलाकर ब्रह्मा के साथ गौने की बारात में जाने का आग्रह करती है। माता मल्हना की बात मानकर कनोजी दिल्ली हेतु लश्कर तैयार कर लेते हैं परन्तु जब ऊदल को पता चलता है तो वे उन्हें मना कर देते हैं। वह अपने अपमान की बात भी बतला देते हैं। चूंकि ऊदल और लाखन का आजीवन मित्रता का करार हो गया था, अस्तु लाखनराना ऊदल की बात मान लेते हैं। अकेले ब्रह्मा गौने हेतु दिल्ली के लिए प्रस्थान कर देते हैं।

दिल्ली पहुँचकर चन्देलों की सेना पड़ाव डाल देती हैं। माहिल गौने की सूचना लेकर पृथ्वीराज के दरबार में जाते हैं। वह कहते हैं, कि-"अकेले ब्रह्मा गौने के लिए लश्कर लेकर आए हुए हैं। अब आपकी जैसी इच्छा हो, वैसा कीजिए। आल्हा-ऊदल को ब्रह्मा साथ नहीं लाए है।" माहिल की बात सुनकर पृथ्वीराज महाराज उत्तर देते हैं कि-"गौने की बिदाई बाद में होगी, पहले युद्ध करके पूर्ण सन्तुष्टि प्राप्त की जाएगी। अतः ब्रह्मानंद अपना क्षत्रित्व दिखलाएं।" पृथ्वीराज चौहान दुर्योधन के अवतार माने जाते हैं। जिस प्रकार दुर्योधन ने अन्तिम समय तक युद्ध किया था उसी प्रकार दिल्लीपति चौहान ने भी जीवनभर और जीवन के अन्तिम समय तक युद्ध किया। दुर्योधन की प्रवृत्ति के कारण पृथ्वीराज की युद्ध-लालसा हमेशा बनी रहती थी। चौहान-नरेश की बात सुनकर माहिल ब्रह्मानंद के पास आकर सारा समाचार बतलाते हैं। उधर महाराज पृथ्वीराज अपने सबसे बलवान पुत्र ताहरसिंह को बुलाकर, ब्रह्मानंद का मोहरा मारने का आदेश दे देते हैं। ताहर तुरन्त सेना तैयार कर लेता है और चौड़ियाराय, गोपीसिंह, टोडरमल, धांधू सहित रणक्षेत्र में उपस्थित हो जाता है। इधर ब्रह्मानंद अपनी सेना लेकर दिल्ली की सेना का सामना करने के लिए आ डटते हैं।

दोनों सेनाओं में भयंकर युद्ध होता है । ब्रह्मा की वीरता के सामने दिल्ली का मोर्चा हटने लगता है । गोपीसिंह व टोडरमल ‹पृथ्वीराज के पुत्र› ब्रह्मा की तलवार की भेंट हो जाते हैं । चन्देल-पुत्र महा पराक्रमी योद्धा था जो अर्जुन का अवतार माना जाता है । विजयश्री चन्देलों के हाथ लगती है । अपने पुत्रों की मृत्यु एवं पराजय का समाचार पाकर दिल्लीपति चौहान चिन्ताग्रस्त हो जाते हैं । अब माहिल पुनः कपट व्यवहार का परिचय देते हैं । वे ताहर को जनाना भेष धारण करके ब्रह्मा का बध करने की सलाह देते हैं । परन्तु यह सलाह ताहर को पसंद नहीं आती है । तब पृथ्वीराज महाराज यह कार्य चौड़ियाराय को सौंपते हैं । चौड़ा इस कला में पारांगत था । अतः वह जनाना भेष धारण करके एवं गुप्त अस्त्र लेकर पालकी में बैठ जाता है तथा ताहर के संरक्षण में कुछ सिपाहियों के साथ ब्रह्मानंद के पड़ाव की ओर प्रस्थान करता है । उधर ब्रह्मानंद को सूचित कर दिया जाता है कि चौहान-नरेश पराजय स्वीकार करके ब्याला की डोली भेज रहे हैं । यह सूचना पाकर चन्देल-नरेश प्रसन्न हो जाते हैं ।

जब चौड़ियाराय चन्देल-नरेश ब्रह्मानंद के पास आता है,तो वह छल करके ब्रह्मा के हृदय में कटारी का प्रहार कर देता है तथा मौका पाकर ताहर दो वाणों के प्रहार से घायल कर देते हैं । बुरी तरह घायल ब्रह्मा पृथ्वी पर गिर पड़ते हैं और मूर्छित हो जाते हैं । उसी समय धांधू आ जाता है । वह ताहर और चौड़ा के कपट-व्यवहार के लिए उन्हें धिक्कारता है । ताहर और चौड़िया पृथ्वीराज को सारा हाल सुनाता है । धांधू राजदरबार में जाकर महाराज पृथ्वीराज को भी धिक्कारता है । वह कहता है कि-"कपट पूर्ण व्यवहार से एक योद्धा की हत्या करना क्षत्री धर्म नहीं है । यह तो कायरता का प्रतीक है ।"

इस घटना की सूचना चौहान के राजमहलों तक पहुँच जाती है । वहाँ रानी अंगमा तथा ब्याला अत्यन्त व्याकुल हो जाती है । ब्याला अपने पति की मृत्यु समझकर जौहर की तैयारी करने लगती है, परन्तु माता द्वारा धैर्य प्रबोधन से उसके दिल में साहस का भाव जाग्रत होता है ।

इधर जगनायक ‹जगनिक› इस घटना का समाचार महोबा भेज देते हैं । दुखद समाचार पाकर महाराज परमर्दिदेव सहित उनकी समस्त रानियाँ विलाप करने

लगती हैं । माता मल्हना मूर्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़ती है । नाना-प्रकार से विलाप करके क्रन्दन करने लगती है तथा माहिल को धिक्कारने लगती है । ब्रह्मानंद ही मात्र चन्देल वंश का कुलदीपक था सो बुझता हुआ-सा प्रतीत हो रहा था । परमर्दिदेव का छोटा पुत्र रंजितसिंह, कीरत सागर के संग्राम में वीरगति प्राप्त कर चुका था । संपूर्ण चन्देल-प्रजा शोक-सागर में डूब जाती है । जब ब्रह्मा के घायल होने का समाचार दशपुरवा में आल्हा के पास पहुँचता है, तो वह ऊदल सहित विलाप करने लगते हैं । रानी देवल, सोनवाँ व फुलवा भी ब्रह्मा के बल-पौरुष का वर्णन करके क्रन्दन करने लगती है । आल्हा माहिल की भर्त्सना करने लगते हैं । अन्त में भाग्य को सर्वोपरि मानकर चुप रह जाते हैं । ऊदल पृथ्वीराज के कपट-व्यवहार एवं चौड़ा के प्रपंच की भर्त्सना करते हैं और कहते हैं कि—

> अकिले ब्रह्मा चढ़े दिल्ली को, घटिया वंश पिथौराराय ।
> ऐसेई मारो रहै मलिखे को, सो गति करी चन्देले क्यारि ।
> उन्हें मुनासिब यह नाहीं थी, जो घटि करी चन्देले साथ ।
> घटिहा राजा दिल्ली वाला, घटिहा वंश चौहानन क्यार ।§1§

<u>बेला के गौने का द्वितीय संग्राम :-</u>

तथाकथित मान्यता के अनुसार नारी को युद्ध का कारण माना गया है । चौहानों और चन्देलों के विनाश का कारण भी नारी ही बनी । वह थी, महाराज पृथ्वीराज की सुपुत्री बेला । जिसके सात अवतार माने गए हैं ।

जब चन्देल-नरेश ब्रह्मानंद बुरी तरह क्षत-विक्षत हो जाते हैं, तो बेला अत्यन्त विलाप एवं क्रन्दन करने लगती है और आल्हा-ऊदल के लिए महोबा पत्र लिखती है । वह ऊदल की वीरता से भली-भाँति अवगत थी तथा यह भी जानती थी कि ऊदल के अतिरिक्त पृथ्वीराज का मोहरा मारने वाला कोई दूसरा नहीं है ।

संदेशवाहक रानी बेला का पत्र लेकर दशपुरवा §महोबा§ जाता है । आल्हा पत्र पढ़कर दंग रह जाते हैं । जब ऊदल को पता चलता है तो वे आल्हा से अनुनय-विनय कर, दिल्लीकेलिएतैयारी कर देते हैं । उनके साथ कन्नौजीराय लाखन का लश्कर भी

- -

संदर्भित ग्रंथ : §1§ बेला के गौने की पहली लड़ाई, कुँवर अमोलसिंह एवं बड़ा आल्हखण्ड : पं. महावीर प्रसाद, पृ. सं. 565.

तैयार हो जाता है,साथ में मीरा सैयद, देबा, धनुवां तेली आदि बहादुर भी अपनी तलवारों को जौहर दिखाने के लिए तैयार हो जाते हैं । आल्हा के निर्देशानुसार संपूर्ण सेना काली वेषभूषा धारण कर लेती है । कारण यह था, कि ब्रह्मा को धोखे से घायल कर देने के बाद पृथ्वीराज ने दिल्ली की कड़ी नाके बंदी कर रखी थी, क्योंकि उन्हें यह भय था कि बनाफर वीर कभी भी सेना लेकर चढ़ाई कर सकते हैं ।

आल्हा-ऊदल की सेना महोबा से दिल्ली की ओर प्रस्थान कर देती है । दिल्ली पहुँचकर ऊदल की चौड़ियाराय से मुलाकात हो जाती है । ऊदल बहाना करते हैं कि यह मांडर की सेना है, जिसे कन्नौज-नरेश ने बेघर कर दिया है । वह नौकरी चाहती है । चौड़ा उन्हें महाराज पृथ्वीराज के दरबार में ले जाता है । शक्तिशाली सेना जानकर दिल्ली-नरेश अपनी रक्षार्थ उसे स्थान दे देते हैं तथा रानी ब्याला के महल की रक्षा में तैनात कर देते हैं । लाखनसिंह तथा ऊदल रात्रि में आपस में बातें करते हैं, तो ब्याला को कुछ संदेह हो जाता है और वह बांदी द्वारा ऊदल को बुलाती है ।

ब्याला के महल में पहुँचकर ऊदल अपना परिचय देते हैं परन्तु उसे विश्वास नहीं होता है । तब वह अपने विवाह की सारी कथा ऊदल से सुनना चाहती है । जब ऊदल ब्रह्मा के ब्याह की सारी कथा सुना देते हैं, तब उसे विश्वास हो जाता है कि यह ऊदल है । ब्याला ऊदल को फटकारती है, क्योंकि वे ब्रह्मा के साथ क्यों नहीं आए । रानी ब्याला की बात सुनकर ऊदल गौने का पूरा हाल बयान करते हैं । महल के चारों ओर महोबा की सेना तैनात थी । ऊदल,मीरा सैयद और लाखन से भी ब्याला का परिचय कराते हैं । ब्याला उन्हें महोबा वापस जाने की सलाह देती है क्योंकि उसका कहना था कि पृथ्वीराज की सेना अजेय है । तब ऊदल और लाखन को आक्रोश आ जाता है । उनकी भुजाएं फड़कने लगती हैं । अब ब्याला को विश्वास हो जाता है कि उनकी डोली अवश्य ही महोबा जाएगी और वह प्रीतम के दर्शन कर सकेगी ।

रानी ब्याला लाखनराना, ऊदल तथा मीरा सैयद को अपने सातों जन्मों की कथा भी सुनाती है और यह सिद्ध करती है कि ऊदल,लाखन तथा मीरा सैयद उसके देवर हैं । वह स्वयं को प्रथम जन्म में मछली, द्वितीय जन्म में नागिन, तृतीय जन्म ब्याला-रूप में बताती है । वह कहती है कि-"लाखन बकुल तथा मीरा सैयद को

दुस्सासन तथा धांधू को दासी §दुस्सासन की§ पुत्र का अवतार बतलाती है ।"§1§

राजकुमारी ब्याला, ऊदलसे पृथ्वीराज दरबार में जाकर गौने की अक्कर §गौने की लोकरीति या रसम§ लाने को कहती है तथा लाखन से डोली लेकर अपनी माता से मिलने की इच्छा व्यक्त करती है । लाखन सैन्यबल के साथ ब्याला की डोली लेकर अंगमा §पृथ्वीराज की पटरानी§ के महल में जाते हैं । वहां ब्याला को उसकी माता अंगमा तथा ताहर की पत्नी समझाती-बुझाती है, परन्तु वह नहीं मानती । वह तो चण्डी स्वरूपा थी ही । ऊदल दिल्लीपति के दरबार से अक्कर लेकर वापस आ जाते हैं । चौहान के द्वारा ऊदल को बन्दी बनाए जाने के सारे प्रयास विफल हो जाते हैं । लाखन महलों से डोली लेकर ब्याला की इच्छानुसार फुलमती देवी के मन्दिर की ओर प्रस्थान करते हैं क्योंकि दिल्ली छोड़ते समय ब्याला अपनी कुलदेवी के दर्शन करना चाहती थी ।

मंदिर में पहुँचकर ब्याला दर्शन करती है और लाखन से कहती है कि-"यदि मेरी डोली चोरी-चोरी महोबा जाएगी, तो संसार हँसी उड़ाएगा । अतः अपनी शक्ति का परिचय देकर डोली जाएगी, इसके लिए तुम्हें हमारे भाइयों और पिता से युद्ध करना होगा ।" लाखन तो महा-पराक्रमी थे ही तथा पृथ्वीराज चौहान से संयोगिता का बदला भी लेना चाहते थे, अस्तु वे सहर्ष तैयार हो जाते हैं । ब्याला ताहर भैया को सूचना देती है । ताहर सेना सजाकर मंदिर के पास आता है । ताहर और लाखन में कठिन संग्राम होता है जिसमें ताहर को अपने मुँह की खानी पड़ती है । ताहर के बाद चौड़ियाराय आता है । उसके साथ युद्ध में लाखन मूर्छित हो जाते हैं तब मीरा सैयद उन्हें उनके बल पौरुष की याद दिलाते हैं । पुनः दोनों में कठिन युद्ध होता है । सैयद, धनुवां आदि की मारों से चौड़ा का मोर्चा हट जाता है और वहां लाखन को विजय प्राप्त होती है । वह ब्याला की डोली लेकर ब्रह्मा के पड़ाव की ओर प्रस्थान करते हैं ।

जब महाराज पृथ्वीराज को यह पता चलता है, कि चौड़ा तथा ताहर, धांधू आदि लाखन से पराजित हो चुके हैं और ब्याला की डोली महोबा की ओर जा रही है तो वह स्वयं अपने हाथी आदिभयंकर पर सवार होकर, डोली की रक्षा हेतु जंग के मैदान में उपस्थित होते हैं । उनके साथ पराजित योद्धा चौड़ा, धांधू, ताहर आदि भी

---

§1§ वही : पृ.सं. 576-577.

महोबा की सेना का सामना करने के लिए आ जाते हैं । इधर लाखनराना, ऊदल, आल्हा, सैयद आदि चन्देलों के मान की रक्षा के लिए तत्पर होकर, ब्याला की डोली ब्रह्मा के पास ले जाना चाहते थे । पृथ्वीराज इसे अपना अपमान समझते थे । वे किसी भी स्थिति में अपनी बेटी की डोली बनफरों और चंदेलों को नहीं देना चाहते थे । अस्तु, दोनों सेनाओं में भयंकर युद्ध होता है । कभी डोली चौहानों के पास होती है तो कभी चन्देलों के अधिकार में ।

इस युद्ध में लाखन अपनी अद्भुत वीरता का परिचय देते हैं, क्योंकि यह निर्णायक युद्ध था । धनुवां तेली(कन्नौज वाला)घायल हो जाता है । बनाफर वीर भी परमाल की विजय-पताका को फहराना चाहते थे क्योंकि उन्होंने चन्देल का नमक खाया था । लाखनसिंह के जौहर से दिल्ली की सेना त्रस्त हो जाती है । चौड़ा-ताहर आदि अपना मोर्चा हटा लेते हैं । ब्याला की डोली लाखन के अधिकार में आ जाती है । तभी पृथ्वीराज निराश हो जाते हैं,और शब्दभेदी वाण, लाल-कमान पर चढ़ाकर लाखन का सामना करने के लिए तैयार हो जाते हैं । उसी समय ऊदल व धांधू उनके आक्रोश को यह कहकर शांत करते हैं कि- लाखन उनके समकक्षी नहीं हैं । लाखन उनके लड़के के समान है । इस प्रकार चौहान के आक्रोश का शमन होता है । वह शब्दभेदी वाण कमान से उतार लेते हैं । पुनः युद्ध होता है और लाखन की कुजरासिन हथिनी, आदिभयंकर {पृथ्वीराज का हाथी} को टक्कर मारती है । इस प्रकार पृथ्वीराज का मोर्चा हट जाता है । लाखन ब्याला की डोली लेकर ब्रह्मानंद के तम्बू में जाते हैं, जहां वह घायल पड़े हुए कराह रहे थे ।

इस प्रकार ब्याला के गौने का द्वितीय संग्राम संपन्न होता है । अगली लड़ाई ब्याला और ताहर की है,जो कि उसका भाई था ।

ब्याला और ताहर की लड़ाई :-

ब्याला की डोली ब्रह्मानंद के लश्कर में पहुँचती है । ब्रह्मानंद वहां मूर्छित पड़े अन्तिम सांसे गिन रहे थे । ब्याला अपने प्रियतम् के ऊपर हाथ फेरती है तथा प्यार करती है । जब उनकी मूर्छा जागती है तो वह ऊदल, लाखन को सामने खड़ा पाते हैं । ब्रह्मा ऊदल से प्रश्न करते हैं, कि- यह स्त्री कौन है ? तब ब्याला हाथ जोड़कर विनम्र स्वर में उत्तर देती है । यथा :-

हाथ जोरि तब ब्याला बोली, मैं ठाड़ी हौं नारि तुम्हारि ।
बेटी हौं मैं पृथ्वीराज की, औ ब्याला है नाम हमारि ।[1]

ब्याला नाम सुनकर चन्देल-नरेश आक्रोश मय हो जाते हैं तथा पृथ्वीराज-पुत्री को नाना-प्रकार से धिक्कारते हैं । वह उसके पिता को नीच, धोखेबाज और कपटी बताते हैं क्योंकि उन्होंने धीर मलखान तथा स्वयं ब्रह्मा का धोखे से वध किया था । ब्याला भी अपने पिता व भाइयों के कपट व्यवहार की निंदा करती है तथा स्वयं को निर्दोष व परतंत्र बताती है । ब्रह्मा को उसकी स्वामी-आस्था पर या पतिव्रत-साधना पर विश्वास नहीं होता है । वे उसकी प्रेम-परीक्षा लेना चाहते हैं । अस्तु कहते हैं :-

यह सुनि ब्रह्मा बोलन लागे, औ ब्याल से कही सुनाय ।
हमको चाहौं जो रानी तुम, तौ यक मानौं बात हमारि ।
शीश काट लावो ताहर को, हमरी नजरि गुजारी आय ।
शीश देखिहैं जब ताहर को, ता दिन जियें चँदेले राय ।[2]

इस प्रकार अपने प्रियतम् की बात सुनकर ब्याला सहर्ष संस्तुति प्रदान करती है । यह पतिव्रत धर्म की पालक थी । वह ब्रह्मा से कहती है कि-"आप अपना घोड़ा हरनागर, ढाल, तलवार, बेंजनी धाग आदि प्रदान करें, तो मैं आपके बचनों को प्रमाणित करती हूँ, परन्तु इससे पहले मैं महोबे जाकर अपनी सास को प्रणाम करना चाहती हूँ तथा महोबा नगर के दर्शन करना चाहती हूँ ।

ब्रह्मा तैयार हो जाते हैं और अपने बड़े भाई से प्रार्थना करते हैं कि वह ब्याला की डोली महोबा ले जाय तथा माता मल्हना व महोबा नगर के दर्शन करवा लाएं । आल्हा कुछ सैनिकों सहित ब्याला की डोली लेकर दिल्ली से महोबा की ओर प्रस्थान करते हैं । उधर माहिल पृथ्वीराज को सूचना दे देते हैं कि अकेले आल्हा ब्याला की डोली लेकर महोबा जा रहे हैं अतः रास्ते में डोली छीन ली जाए । महाराज पृथ्वीराज यह कार्य चौंड़ा ब्राह्मण को सौंपते हैं । चौंड़ा सेना लेकर आल्हा का पीछा करता है । रास्ते में आल्हा तथा चौंड़ियाराय का युद्ध होता है । आल्हा डटकर चौंड़ा की सेना का सामना करते हैं । उनका हाथी पचशावद चिंघारने लगता है । उसकी आवाज सुनकर लाखन, आल्हा की सहायतार्थ ऊदल को भेजते हैं । ऊदल के पहुँचने

---

[1] आल्हखंड : पं. भोलानाथ, संस्करण-1921, पृ.सं. 589.
[2] वही : पृ.सं. 589.

पर चौड़ा की सेना का मोर्चा हट जाता है ।

जब चौड़ा पराजित होकर आता है, तो महाराज पृथ्वीराज को बड़ी ग्लानि होती है और वह स्वयं डोली प्राप्त करने के लिए आल्हा का सामना करने हेतु उद्यत होते हैं । वह रास्ते में ब्याला की डोली घेर लेते हैं, तब तक आल्हा-ऊदल की सहायता के लिए लाखनराना पहुँच जाते हैं । लाखन के जौहर से दिल्ली की सेना पराजित होकर लौट आती है और आल्हा डोली लेकर महोबा चले जाते हैं । ब्याला की डोली महोबा पहुँचती है । वहाँ रानी मल्हना अपनी अन्य रानियों सहित ब्याला को डोली से उतारती हैं । कुलरीति एवं अन्य औपचारिकताएं पूरी करती हैं । वह अपनी बहू को महोबे घराने का बहुमूल्य नौलखाहार भी भेंट करती है । तदोपरान्त ब्रह्मा का समाचार पूंछती है । अपने कुलदीपक के मूर्छित होने एवं अन्तिम सांसों का समाचार सुनकर सभी रानियाँ, देवल, फुलवा, सोनवां आदि क्रन्दन करने लगती हैं । ब्याला, भाग्य का करिश्मा मानकर सबको धैर्य-धारण हेतु समझाती है । वह माता देवल को दोषी ठहराती है कि उन्होंने ब्रह्मा को ऊदल के बिना ही गौने के लिए भेज दिया । उनका विचार था कि यदि ऊदल ब्रह्मा की सहायतार्थ दिल्ली गौने हेतु जाते तो ब्रह्मा जख्मी न होते । माता देवल,गौने का सारा समाचार सुनाकर आल्हा-ऊदल को निर्दोष साबित करती है और भाग्य की रेखाओं को प्रबल मानती है । ब्याला अपनी चूड़ियां तोड़ना चाहती है परन्तु माता मल्हना उसे समझाती है कि प्रथम तो अभी ब्रह्मा मृत्यु को प्राप्त नहीं हुए, द्वितीय- वह महोबा में रहकर सुख एवं वैभव-पूर्वक जीवन-यापन करे । ब्याला, महोबा के प्रसिद्ध स्थान जैसे- सागर के मध्य ब्रह्मा का बंगला, फुलबगिया, तथा महल आदि देखना चाहती है । अपनी नन्द चन्द्रावलि के साथ महल का भ्रमण करती है । महल के वैभव को देखकर वह अपने भाग्य को कोसती है ।

महोबा-दर्शन के उपरान्त ब्याला आल्हा के संरक्षण में दिल्ली के लिए वापस प्रस्थान करती है । मार्ग में वह सिरसागढ़ में रानी गजमोतिन सती-स्मारक स्थल का दर्शन करना चाहती है । अतः आल्हा सिरसागढ़ जाते हैं । गजमोतिन-सती स्थल को प्रणाम करके,ब्याला दिल्ली आ जाती है । ब्रह्मा अपने तंबू में लेटे हुए अब भी कराह रहे थे । वह अपने दुर्भाग्य पर पश्चाताप करती हुई महोबा का सारा समाचार अपने प्रियतम से बयान करती है ।

अब ब्याला अपने पति की अन्तिम इच्छा का पालन करने के लिए मर्दाना

वेष धारण करके एवं हरनागर घोड़े पर सवार होकर युद्ध के लिए तैयार होती है । सर्व प्रथम वह दिल्ली दरबार में संदेशवाहक द्वारा पत्र भेजती है कि- महाराज पृथ्वीराज गौने की अथकर ‖।‖ तुरन्त भेज दें अन्यथा युद्ध के लिए तैयार हो जाएं । संदेशवाहक पत्र लेकर महाराज पृथ्वीराज के दरबार में जाता है । पृथ्वीराज पत्र पढ़कर क्रुद्ध हो जाते हैं । उन्हें यह प्रतीत होता है कि महोबा जाकर ब्याला ने ब्रह्मा को पुनः सचेत कर दिया है । वह अपने पुत्र ताहर तथा ब्राह्मण-पुत्र चौड़ियाराय को समरभूमि में महोबा की सेना का सामना करने का आदेश देते हैं । संदेशवाहक द्वारा संदेश पाकर ब्याला भी सेना लेकर रणक्षेत्र में आ डटती है । ब्याला अपने अद्भुत जौहर का परिचय देती है । दिल्ली की सेना मोर्चा हटाने लगती है तब चौड़ा एवं ताहर भीषण नरसंहार करते हुए आगे बढ़ते हैं । मर्दाना रूप धारिणी ब्याला के सामने आकर वह ललकारते हैं । वह उन दोनों को मुँहतोड़ जवाब देती है । अन्त में ताहर उसके ऊपर तेगा का प्रहार करता है । तेगा के प्रहार से उसकी ढाल फट जाती है और बांये हाथ के कुर्ते की आस्तीन खुल जाती है जिससे उसकी चूड़ियाँ दिखाई देने लगती है । चूड़ियाँ देखकर चौड़ा समझ जाता है कि यह ब्रह्मानन्द नहीं, बल्कि मर्दाना भेष में पृथ्वीराज-सुता ब्याला है । अस्तु,वह ताहरसिंह को सावधान करता है कि वह ब्याला है,इसलिए उस पर हाथ न चलाए । एक तो वह ताहर की बहिन, दूसरे स्त्री । युद्ध में स्त्री पर हाथ चलाना क्षत्रिय धर्म के विपरीत माना जाता था ।

युद्ध में यह अप्रत्याशित दृश्य देखकर ताहर विचलित हो जाता है । इसी अवसर का लाभ उठाकर ब्याला अपने भाई ताहर पर खड्ग का प्रहार करती है और उसका शीश काट लेती है । ताहर का वध देखकर चौड़िराराय किंकर्तव्य विमूढ़ हो जाता है और अपना मोर्चा हटा देता है । ब्याला ताहर का शीश लेकर ब्रह्मा के तम्बू में आती है । ताहर का सिर देखकर ब्रह्मानंद अपनी प्रियतमा की निष्ठा पर उसे बधाई देते हैं और उनका प्राणान्त हो जाता है । उधर चौड़ा,महाराज पृथ्वीराज को युद्ध का सारा हाल सुनाता है । सूचना पाकर दिल्ली-नरेश शोक-सागर में डूब जाते हैं । महलों में समाचार पाकर पृथ्वीराज की पटरानी रानी अगमा, सभी रानियों सहित विलाप करने लगती है तथा ब्याला को धिक्कारने लगती है । संपूर्ण प्रजा ब्याला के कुकृत्य की भर्त्सना करती हुई शोकाकुल हो जाती है ।

‖।‖ गौने में दिया जाने वाला विवाह का आधा दहेज ।

<u>चंदन बगिया काटने की लड़ाई :-</u>

पृथ्वीराज-सुता बेला अपने भाई ताहरसिंह का वध करके, उसका शीश चन्देल-नरेश ब्रह्मा की नज़रों के समक्ष प्रस्तुत करती है। अपने शत्रु का सिर देखकर ब्रह्मा को हार्दिक सन्तुष्टि होती है। वह बेला को प्रसन्नता की नज़रों से देखते हैं। वह उसे समझाते है कि-"अब मेरी इच्छा पूर्ण हो गई है, अब तुम चाहो महोबा का राज करो अथवा अपने पिता के पास रहो अथवा मेरे साथ सती हो जाओ।" बेला को समझाते हुए ब्रह्मानंद अपने प्राण छोड़ देते हैं। अब बेला अपने पति के बलपौरुष का वर्णन करती हुई विलाप करने लगती है। वैधव्य अवस्था में उसने अपने पिता से भी शत्रुता का व्यवहार किया था, अब उसे अपने कृत्य पर पश्चाताप हो रहा था। अस्तु, उसने अपने स्वामी के साथ सती हो जाना उचित समझा।

उसी समय ऊदल और लाखन तंबू में उपस्थित हो जाते हैं। बेला का क्रन्दन देखकर वे भी दुखी हो जाते हैं तथा बेला को धैर्य धारण करने के लिये अभिप्रेरित करते हैं। बेला ब्रह्मानंद के साथ सती होने का प्रस्ताव रखती है। ऊदल-लाखन उसे समझाते हैं, कि भाग्य का फल मानकर वह महोबा में जीवन व्यतीत करे, परन्तु वह उनकी बात नहीं मानती है।

बेला ब्रह्मानंद के साथ सती होने को प्रस्तुत होती है। इसके लिए वह पृथ्वीराज की चन्दन बगिया का चन्दन चाहती है। वह ऊदल को बुलाकर ब्रह्मा की चिता के लिए चन्दन बगिया से चन्दन की लकड़ी लाने का आदेश देती है। लाखन-ऊदल सेना लेकर महाराज पृथ्वीराज चौहान की चन्दन की बगिया कटवा लेते है। जब चौंडा को पता चलता है कि ऊदल ने बाग से सारी चन्दन की लकड़ी कटवा ली है, तो वह धांधू को लेकर ऊदल व लाखन का सामना करने के लिए आता है। दोनों में युद्ध होता है और ऊदल की विजय होती है। तदोपरान्त बीकानेर के राजा विजयसिंह ऊदल का प्रतिरोध करने हेतु आते हैं। लाखन की ओर से गांजर के राजा हरीसिंह तथा वीरसिंह उनका सामना करते हैं। हरीसिंह व वीरसिंह दोनों वीरगति को प्राप्त हो जाते हैं। अब लाखन चिंतित हो जाते हैं और अपने मामा गंगासिंह से विजयसिंह

- -

संदर्भित ग्रन्थ : बेला का गौना : लेखक- कुँवर आमोलसिंह, श्रीकृष्ण पुस्तकालय प्रकाशन, कानपुर-1 : सातवाँ संस्करण-1972. एवं
आल्हखण्ड अनुशीलन : पं. नारायण प्रसाद, लखीमपुर खीरी (उ.प्र.) अवध, संस्करण-1952.

का सामना करने का अनुरोध करते हैं । गंगासिंह के सामने विजयसिंह का मोर्चा हटने लगता है तथा विजयसिंह गंगासिंह की तलवार की भेंट हो जाते हैं । दिल्ली की सेना पलायित हो जाती है ।

लाखन व ऊदल,चन्दन लाकर बेला के सामने उपस्थित होते हैं । जब बेला चन्दन देखती है तो कहती है, कि-"यह चन्दन की लकड़ी गीली अर्थात हरी है । इसकी चिता अग्नि नहीं पकड़ेगी । सूखा चन्दन चाहिए ।" ऊदल विनम्र निवेदन करते हुए कहते हैं कि- कन्नौज में सूखी चन्दन-लकड़ी पर्याप्त मात्रा में है । वह वहां से सती-चिता हेतु चन्दन उपलब्ध करा देंगे । ऊदल की बात बेला को पसन्द नहीं आती है । उसे विशेष प्रकार की, विशेष जगह की चन्दन की लकड़ी चाहिए थी । जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि जिस प्रकार द्वापर में द्रौपदी महाभारत का कारण बनी, उसी प्रकार कलयुग में द्रौपदी रूपी बेला चौहानों और चन्देलों के विनाश का कारण थी । अस्तु वह ऊदल को बुलाकर, अपने पिता के राज दरबार से चंदन के बारह सूखे खंभे लाने का आदेश देती है । यथा :-

लावो चंदन तुम दिल्ली से, जहं है पिरथीराज दरबार ।
बारह खंभा हैं चंदन के, लावो जाय अबहिं उखराय ।§।§

बेला द्वारा युद्ध को बार-बार निमंत्रण देने की बात सुनकर ऊदल क्रुद्ध हो जाते हैं तथा इस कार्य में अपनी असमर्थता व्यक्त करते हैं ।

ऊदल का मनोभाव जानकर बेला उन पर नाना-प्रकार के व्यंग व आक्षेपारोपण करती है । विवश ऊदल लाखन के पास जाते हैं तथा बेला की इच्छा व्यक्त करते हैं । लाखनराना भी बेला को समझाते हैं परन्तु वह अपनी प्रतिज्ञा पर अटल थी । राज-दरबार के खंभे उखाड़ना मृत्यु को निमंत्रण देना था । जब लाखन और ऊदल को कोई विकल्प दिखाई नहीं दिया, तो वे प्राणों का मोह त्यागकर, सैन्यबल के साथ दिल्ली दरबार से चंदन-खंभा लाने के लिए तैयार हो गए ।

चन्दन-खंभा उखाड़ने की लड़ाई :-

लाखनराना तथा ऊदल, देबा, जगनिक एवं धनुवां आदि को लेकर महाराज

---

§।§ बेला सती की लड़ाई : कुँवर अमोलसिंह, पृ.सं. 85.

पृथ्वीराज चौहान के दरबार की ओर प्रस्थान करते हैं । वे अपने सैन्यबल को तीन भागों में विभक्त करके,एक ही साथ राज-दरबार में धावा बोल देते हैं । वहां वीर-भुगन्ता नामक योद्धा तथा रमया दानव से घोर संग्राम होता है । उन्हें पराजित कर, उदल चन्दन खंभा उखड़वा लेते हैं तथा अपने तम्बू की ओर प्रस्थान कर देते हैं । वीर-भुगन्ता और रमया द्वारा समाचार सुनकर अंगद राजा मार्ग में चन्दन खंभों को घिरवा लेता है, उसके पीछे रमया तथा वीर-भुगन्ता पुनः आ जाते हैं । लाखन की ओर से परशू राजा उनका सामना करता है । भीषण युद्ध होता है । परशू तथा अंगद दोनों रणभूमि में चिरनिंद्रा में सो जाते हैं । वीर-भुगन्ता तथा रमया के साथ उदल का पुनः युद्ध होता है । रमया वीरगति को प्राप्त हो जाता है तथा वीर भुगन्ता अपना मोर्चा हटा देता है ।

लाखन अवसर पाकर पृथ्वीराज के महल की घेरा-बन्दी कर देते हैं और संयोगिता के अपमान का बदला लेना चाहते हैं । जगनिक उनका विरोध करते हैं तब उदल उन्हें समझाते हैं । चूंकि कन्नौज-नरेश ने महोबा की मर्यादा एवं मित्रता के दायित्व का निर्वाह करने के लिए प्राणों की बाजी लगा दी थी, अस्तु उदल के सामने लाखन-राना की बात का विरोध करने के लिए कोई विकल्प न था । वह तुरन्त राजमहल में जाकर, दिल्ली-नरेश की पटरानी अंगमा से मुलाकात करते हैं । पहले तो संपूर्ण राजमहल उदल को देखकर आतंकित हो जाता है । रानी भयभीत होकर उदल से कहने लगती है कि—

> सूरत देखी जब उदल की, अंगमा बहुत गई घबराय ।
> बोली अंगमा नर उदल से, तुम सुनि लेउ उदयसिंह राय ।
> हाथ चलैयो ना काहू पर, तुम तौ लरिका लगौ हमारि ।
> बोले उदल हाथ जोरि तब, मैं माता की लेंउ बलाय ।{1}

उदल का कैसा पवित्र चरित्र वर्णित किया गया है, कि दुश्मन के साथ भी सहयोग । उनके सामने लाखन के संकल्प का भी प्रश्न था तथा चौहान वंश की मर्यादा का भी । अंगमा रानी महोबा-नरेश बासुदेव की पुत्री थी, जो उदल की मौसी थी । चिन्तन-मनन करके उदल ने अंगमा से प्रार्थना की, कि- कन्नौज-नरेश लाखन रंगमहल के दरवाजे

{1} बड़ा आल्हखण्ड : पं. महावीर प्रसाद जी, पृ.सं. 608, संस्करण-1921.

पर खड़े हुए हैं । उन्होंने राजमहल की घेरा-बन्दी कर ली है तथा वे संयोगिता-हरण के अपमान का बदला लेना चाहते हैं ।

रानी अत्यन्त श्रीहीन हो जाती है । तब ऊदल सलाह देते हैं कि-"माता ! बांदी या सेविका को डोली में बिठाकर दरवाजे तक भेज दो । मैं रंगमहल के दरवाजे से डोली वापिस करवा दूँगा ।" अंगमा ऐसा ही करती है । बांदी की डोली रंगमहल के मुख्य द्वारा पर जाती है, साथ में ऊदल जाते हैं । ऊदल, लाखन से बहाना करते हैं कि यह रानी अंगमा की डोली है । आपकी प्रतिज्ञा पूर्ण हो गई । वह पुनः निवेदन करते हैं कि---

ऊदल बोले तंह लाखनि से, दादा मानौं कही हमारि ।
परन तुम्हारो पूरो होइ गया, डोला आयो अगमदे क्यार ।
डोला फेरि देउ अपनों करि, तुम्हरो नाम होय संसार ।§1§

लाखन प्रसन्न होकर डोली वापिस कर देते हैं । ऊदल कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं । इस प्रकार दोनों की प्रतिज्ञाएं रह जाती हैं । चौहान वंश की मर्यादा की रक्षा भी हो जाती है तथा लाखनराना की प्रतिज्ञा भी पूर्ण हो जाती है ।

जब महाराज पृथ्वीराज चौहान बिसहिन पर विजय प्राप्त करके, दिल्ली आते हैं, तो उन्हें सारा हाल मालूम होता है । उन्हें यह भी मालूम होता है कि ऊदल ने चौहान वंश की मर्यादा की रक्षा की है । अतः वे मन ही मन ऊदल की प्रशंसा करते हैं । परन्तु दरबार के चन्दन-खंभों का उखाड़ा जाना घोर अपमान था । अतः वह अपमान का बदला लेने के लिए चौड़ा, धांधू आदि को लेकर ब्रह्मा के तम्बुओं पर आक्रमण कर देते हैं । ऊदल निवेदन करते हैं कि- महाराज, ब्याला की आज्ञा पालन हेतु चंदन-खंभे उखाड़े गए हैं । दिल्ली-नरेश को सन्तोष नहीं होता है । उनके दिल में बार-बार किए जा रहे अपमान की कसक थी । अस्तु भीषण युद्ध होता है । धांधू के साथ युद्ध में धनुवां तेली तथा लला तमोली §कन्नौज वाले§ रणचण्डी के शिकार हो जाते हैं ।

अब लाखन व ऊदल एक साथ पृथ्वीराज की सेना का सामना करते हैं । उनका, चौड़ियाराय, धांधू तथा दिल्ली-नरेश के साथ भीषण संग्राम होता है । लाखन व ऊदल

---

§1§ वही : पृ.सं. 609 एवं 611.

अद्भुत वीरता का परिचय देते हैं । जब ऊदल का सामना स्वयं पृथ्वीराज चौहान से होता है तो वे कहते हैं कि--

हाथ जोरि के ऊदल बोले, तुम सुनि लेउ पिथौराराय ।
सती होइ है ब्याला रानी, सो हम खंभ लिए उखराय ।
जो तुम छिनिहौ इन खंभन को, तौ जग होइ है हंसी तुम्हारि ।
काज हमारा ना अटका कछु, है यह काज ब्यलनदे क्यार ।
खंभ न देहैं हम तुमको अब, चाहैं प्राण रहैं की जायं ।
ताते मानौं कही हमारी, अपनौं कूंच जाउ करवाय ।§1§

महोबा सेना तथा लाखन-ऊदल की तलवारों के प्रहार से भयभीत होकर, दिल्ली की सेना पलायन करने लगती है । चौहान भी सोच समझकर अपना मोर्चा हटा लेते हैं ।

ब्याला-सती का संग्राम :-

"परमाल रासो" की कीर्ति-पताका एवं विजयश्री की श्रृंखला में ब्याला-सती का संग्राम अन्तिम कड़ी के रूप में चित्रित माना जाता है । जब ब्याला अपने भाई ताहरसिंह का शीश काटकर अपने स्वामी के समक्ष प्रस्तुत करती है, तो उन्हें अन्तिम सन्तुष्टि होती है और इसी अन्तिम सन्तुष्टि के साथ उनका प्राणान्त हो जाता है । ब्याला की आज्ञानुसार ऊदल चन्दन बगिया कटवाते हैं । तत्पश्चात् महाराज पृथ्वीराज के दरबार के चन्दन खंभे उखाड़ने का उपक्रम करते हैं ।

भीषण संघर्ष के उपरान्त लाखनसिंह तथा ऊदल, दिल्ली दरबार के चन्दन-खंभे उखाड़ कर रानी ब्याला के सामने प्रस्तुत करते हैं । अब ब्याला अपने स्वामी ब्रह्मानंद के साथ सती होने की तैयारी करती है । उसकी आज्ञानुसार दिल्ली, महोबा, कन्नौज और बलखबुखारे की सीमा-बिन्दुपरचिता बनाई जाती है । मास अगहन सुदी एकादशी के दिन ब्याला-सती का उपक्रम माना जाता है । यथा :-

अगहन मास सुदी एकादशि, सत्ती भई ब्यलनदे रानि ।§2§

ऊदल, पृथ्वीराज के दरबार के चन्दन-खंभों के द्वारा चिता का निर्माण करते हैं । रानी संपूर्ण श्रृंगार करके, अपने स्वामी के शव को चिता पर आसीन करने का आदेश

---

§1§ वही : पृ.सं. 609 एवं 611.
§2§ आल्हखंड : खेमराज, पृ.सं. 612.

देती है तथा स्वयं भी उस पर आसीन होती है । ब्याला-सती की सूचना पाकर महोबा, दिल्ली आदि से अनेक प्रजाजन,सती के दर्शन हेतु उपस्थित हो जाते हैं । अपनी पुत्री के सती का समाचार पाकर महाराज पृथ्वीराज स्वयं विशाल सेना के साथ सती-स्थल पर उपस्थित हो जाते हैं । वे यह एलान करते हैं कि- यदि चन्द्रवंश का कोई हो, तो चिता में अग्नि प्रज्वलित करे अन्यथा ब्याला-सती नहीं हो सकती है ।

चन्द्रवंश अर्थात चन्देल वंश का सूर्यास्त हो चुका था । ब्याला ने चिता अग्नि हेतु ऊदल को अधिकृत किया था । यह बात पृथ्वीराज के लिए न केवल अपमान जनक थी, अपितु असहनीय थी । वह बनाफरों को निम्न कोटि का राजपूत मानते थे । अस्तु बनाफरों और चौहान में वाद-विवाद हो जाता है । दोनों सेनाओं में अन्तिम संघर्ष या संग्राम की रणभेरियाँ बजने लगती हैं । तोपों की गर्जना से आकाश फटने लगता है । तोपों के पश्चात् भाला-बरछा और तलवारें बिजली की तरह चमकने लगती हैं । बरछे नागों की तरह फुंकारने लगते हैं । लाखन व ऊदल इस बात को भली-भाँति जानते थे, कि यह निर्णयात्मक युद्ध है । दोनों अपनी आन की रक्षा के लिए जान की बाजी लगाकर,समर-भूमि में कूद पड़े ।

चौड़ा और देबा का मोर्चा होता है, जिसमें अपनी वीरता का परिचय देता हुआ देबा वीरगति को प्राप्त हो जाता है । इसके बाद जगनिक, चौड़ियाराय का सामना करते हैं । रणकौशल का प्रदर्शन करने के उपरान्त वे भी भारत माता की गोदी में चिर निंद्रा में सो जाते हैं । भूरा मुगल काबुल का महान योद्धा महाराज पृथ्वीराज की ओर से लड़ रहा था । ताल्हन सैयद भूरा मुगल का सामना करते हैं और उसे धराशायी कर देते हैं । भूरामुगल की मृत्यु के बाद वीर भुगन्ता, ताल्हन सैयद का सामना करता है । इस द्वन्द युद्ध में ताल्हन सैयद वीरगति को प्राप्त हो जाते हैं ।

ताल्हन सैयद की मृत्यु के बाद ऊदल और लाखन चिंतित हो जाते है । अब वीर भुगन्ता का सामना, लाखनसिंह के मामा गंगासिंह करते हैं । इस युद्ध में दिल्ली-सेना का पराक्रमी योद्धा वीर भुगन्ता काल का ग्रास बन जाता है । अब गंगासिंह का सामना करते हैं धांधू, जो महाराज पृथ्वीराज के राज-पुरोहित का पराक्रमी बेटा था । इस द्वन्द युद्ध में गंगासिंह रणचंडी का शिकार बन कर रह जाते हैं । अपने

मामाश्री का बध देखकर लाखन कोधित होकर युद्ध करने लगते हैं और धांधू को मौत के घाट उतार देते हैं ।

अपने महापराक्रमी योद्धाओं का विनाश देखकर, महाराज पृथ्वीराज चौहान क्रोधातुर होकर संपूर्ण सैन्यबल के साथ लाखन की सेना पर धावा बोल देते हैं । विशाल दंगल देखकर लाखन विचलित नहीं होते हैं । वह अपनी दैवीय हथिनी भुरही को नाना-प्रकार से प्रबोधित करते हैं । उसे उचित सम्मान देते हैं और इष्ट देवता का स्मरण करके, दिल्ली-सेना पर टूट पड़ते हैं । लाखन के युद्ध कौशल एवं भुरही द्वारा साँकल घुमाने के विनाश से पृथ्वीराज विचलित हो जाते हैं । वह लाखन के समक्ष उपस्थित होकर उन्हें वापस कन्नौज लौट जाने की सलाह देते हैं । परन्तु जिसने केवल आगे बढ़ना मात्र सीखा हो, वह कैसे पैर पीछे हटा सकता है । दोनों में आक्रोशपूर्ण वार्तालाप होता है । अन्त में पृथ्वीराज चौहान को विवश होकर अपनी लाल कमान उठाना पड़ती है । उनके तरकश में बाईस वाण थे । समस्त वाण लाखन की ढाल फाड़कर उनके सीने को पार कर जाते हैं, इसके उपरान्त भी लाखन विचलित नहीं होते हैं । भुरही हथिनी आक्रोश में आकर चौहान के हाथी आदिभयंकर को टक्कर मारती है । आदिभयंकर पीछे हट जाता है और पृथ्वीराज लज्जित होकर अपना मोर्चा हटा लेते हैं । पृथ्वीराज के हटने पर लाखन हथिनी के हौदा में गिर जाते हैं और उनका प्राणान्त हो जाता है । चौड़ियाराय उनकी ढाल ग्रहण कर लेता है और ऊदल के मोर्चे पर पहुँचता है ।

अपने परम मित्र की मृत्यु का समाचार सुनकर ऊदल विलाप करने लगते हैं । वे कहने लगते हैं कि--

हाय विधाता यह कैसी भई, हमसे बिछुरो मित्र हमार ।
देखि न पाये मरती बिरिया, मारे गए कनौजीराय ।
बचन बंधे हमरे संग आए, यहाँ पर दीन्हे प्राण गंवाय ।
माता मिलिहै न देवैसी, भाई न मिले वीर मलखान ।
मित्र कनौजी अस मिलिहै ना, चाहे सात धरौं अवतार ।
दिया बुझाय गयो कनवज को, अब हम देहैं कौन जवाब ।§1§

- -

§1§ ब्याला सती संग्राम : कुँवर अमोलसिंह, पृ.सं.46,47.

इस प्रकार ऊदल नाना-प्रकार से विलाप कर क्रन्दन करने लगते हैं । वे आल्हा को भी उपालंभ देते हैं,क्योंकि वह ही इस विनाश का कारण थी । वह उसे बार-बार धिक्कारते हैं । अब ऊदल प्राण-मोह का पूर्ण रूपेण परित्याग करके चौंड़ियाराय को ललकारते हैं । वह चौंड़ा द्वारा किए गए अनेक प्रहारों को नाकाम कर देते हैं । परन्तु उनके प्राणान्त में विलम्ब हो रहा था । वह तो अपने मित्र के साथ ही वीरगति पाना चाहते थे और यह भी जानते थे कि उनकी मृत्यु मात्र चौंड़ियाराय के द्वारा होगी । अस्तु, वह बेंदुला को उड़ाकर चौंड़ा के हाथी के मस्तक पर आ डटते हैं । चौंड़िया अपने खड्ग के प्रहार से ऊदल का सिर, धड़ से अलग कर देता है । इस प्रकार ऊदल वीरगति को प्राप्त हो जाते हैं । उनका शव सीधा स्वर्गलोक की ओर रवाना हो जाता है ।

अपने चाचा की मृत्यु का समाचार सुनकर इन्द्रलसिंह विलाप करने लगते हैं और अपने पिता आल्हा से बदला लेने का निवेदन करते हैं । आल्हा स्वयं अपने सहोदर की हत्या से अत्यन्त कुपित थे । वह पूर्ण वेग से चौंड़ियाराय पर आक्रमण कर देते हैं । उन्हें यह मालूम था, कि चौंड़ा गुरु द्रोणाचार्य का अवतार है और उसे यह भी वरदान प्राप्त था, कि चौंड़ा के रक्त की जितनी बूँदे ज़मीन पर गिरेंगी, उतने चौंड़ा बन जाएंगे । यही किंवदन्ती रावण के संदर्भ में भी विख्यात है । अतः आल्हा उसे मल्ल-युद्ध हेतु ललकारते हैं । उसे ज़मीन पर पटक-पटककर उसकी हत्या कर देते हैं । चौंड़ा की हत्या के बाद वह भूखे सिंह की तरह पृथ्वीराज पर टूट पड़ते हैं । दोनों में भयंकर युद्ध होता है । पृथ्वीराज धनुष विद्या में निपुण थे । वह बाणों की बौछार आरम्भ कर देते हैं ।

पृथ्वीराज का एक बाण आल्हा की भुजा को घायल कर देता है । आल्हा की घायल भुजा से रक्त के स्थान पर दूध की धार बह निकलती है । यथा :-

तीर चलायो पृथ्वीराज ने, लागो तीर भुजा में जाए ।
लगत तीर के भुजदण्डन में, निकसी तुरत दूध की धार ।§1§

अब आल्हा को अपने अमरत्व के वरदान का बोध होता है । अस्तु वह पश्चाताप करने लगते हैं कि यदि उन्हें यह ज्ञात होता कि वे अमर हैं,तो ऊदल का बध न होता ।

---

§1§ वही : पृ. सं. 62.

उन्हें ऐसा मालूम था कि ऊदल को अमरत्व का वरदान प्राप्त है । अब वे निश्चिन्त होकर युद्ध करने लगते हैं । उनके भीषण प्रहारों तथा हाथी पचशावद के जौहर के परिणाम स्वरूप पृथ्वीराज का मोर्चा हट जाता है । आल्हा तो अपने सहोदर भ्राता की मृत्यु का बदला लेना चाहते थे । अतः देवी द्वारा प्रदत्त खाँड़ा {खड्ग} म्यान से निकाल लेते हैं । ऐसा कहा जाता है कि खड्ग की चमक से शत्रु के सिर धड़ से अलग हो जाते हैं । संपूर्ण रणभूमि में मात्र शव ही शव शेष रह जाते हैं । मात्र शेष या जीवित रह जाते हैं- महाराज पृथ्वीराज चौहान तथा उनका अन्तरंग मित्र एवं कवि चन्द्रभाट । क्योंकि वह दैवीय खाँड़े के प्रभाव से परिचित थे, इसलिए वह दोनों एक विशाल वृक्ष की ओट में हो जाते हैं, जिससे खाँड़े की चमक का इन पर प्रभाव नहीं पड़ता है ।

इसी समय चन्देल वंश के मान्य गुरु गोरखनाथ उपस्थित हो जाते हैं और आल्हा का हाथ पकड़ लेते हैं । वह उनका भाव प्रबोधन भी करते हैं कि दैवीय अस्त्रों का प्रयोग मानव पर वर्जित है । गुरु के आने पर महाकवि चन्दवरदाई और पृथ्वीराज भी उनके समक्ष उपस्थित हो जाते हैं । आल्हा पुनः उनका वध करने के लिए दैवीय खड्ग उठाते हैं, तब पुनः गोरखनाथ जी उन्हें समझाते हैं, कि- यह संभाव्य था, इसलिए ऐसा हुआ । अब तुम अपने पुत्र सहित मेरे साथ कजरीवन में समाधि हेतु प्रस्थान करो, क्योंकि तुम व तुम्हारा पुत्र इन्दल अमर हैं ।

उधर इस महान विनाशकारी युद्ध एवं विनाश-लीला की सूचना महोबा पहुँचती है । सूचना पाते ही, सोनवाँ सहित समस्त रानियाँ विलाप करती हुई रणक्षेत्र की ओर प्रस्थान करती हैं । मार्ग में गुरु गोरखनाथ के साथ आल्हा व इन्दल मिल जाते हैं । वह {सोनवाँ} मायावी ममता के कारण अपने पति से लिपट जाना चाहती है, परन्तु अब आल्हा को मिथ्या संसार का भाव-बोध हो गया था । वह वरदान के प्रभाव से एक विशेष हाथी के द्वारा सीधे स्वर्गलोक की ओर प्रस्थान कर, चले जाते हैं । सोनवाँ-फुलवा आदि विलाप करती हुई मृत्युलोक में रह जाती हैं । अन्त में वे स्वयं को, अग्नि को समर्पित कर देती हैं ।

महाराज परिमाल एवं मल्हना भी विनाश-लीला की सूचना को सहन करने में असफल रहे । रानी मल्हना, चन्द्रमा द्वारा प्रदत्त पारस की पूजा-अर्चना करके,

उसे महोबा-सागर में विसर्जित कर देती है और यह आन लगा देती है, कि—

चन्द्र वंश में जो कोई होवे, महुबे आय लेय अवतार ।
ताघर ऐओ तुम पूजन हित, नाहीं तुम्हें और ते काम ।
यह कह पारस पत्थर ले के, सो सागर में दियो सिराय ।{1}

इस प्रकार चन्देल वंश, राठौर वंश {कन्नौज वाला} तथा चौहान वंश समाप्त हो गया था । परमाल इस पीड़ा को सहन न कर सके । लंघन करके उन्होंने भी अपना शरीर त्याग दिया और रानी मल्हना उनके साथ सती हो गई । ऐसा माना जाता है । यथा :-

लंघन करिके परिमाले ने, दुख ते दीन्हे प्राण गंवाय ।
सती होय गई मल्हना रानी, महुबे दीपक गयो बुझाय ।{2}

- -

{1} बड़ा आल्हखण्ड : पं. सीताराम जी, हिन्दी पुस्तकालय मथुरा {प्रकाशन}, संस्करण 1954, पृ. सं. 624.

{2} वही : पृ. - 624.

-:xxx:-